सुदर्शनालोक
2020

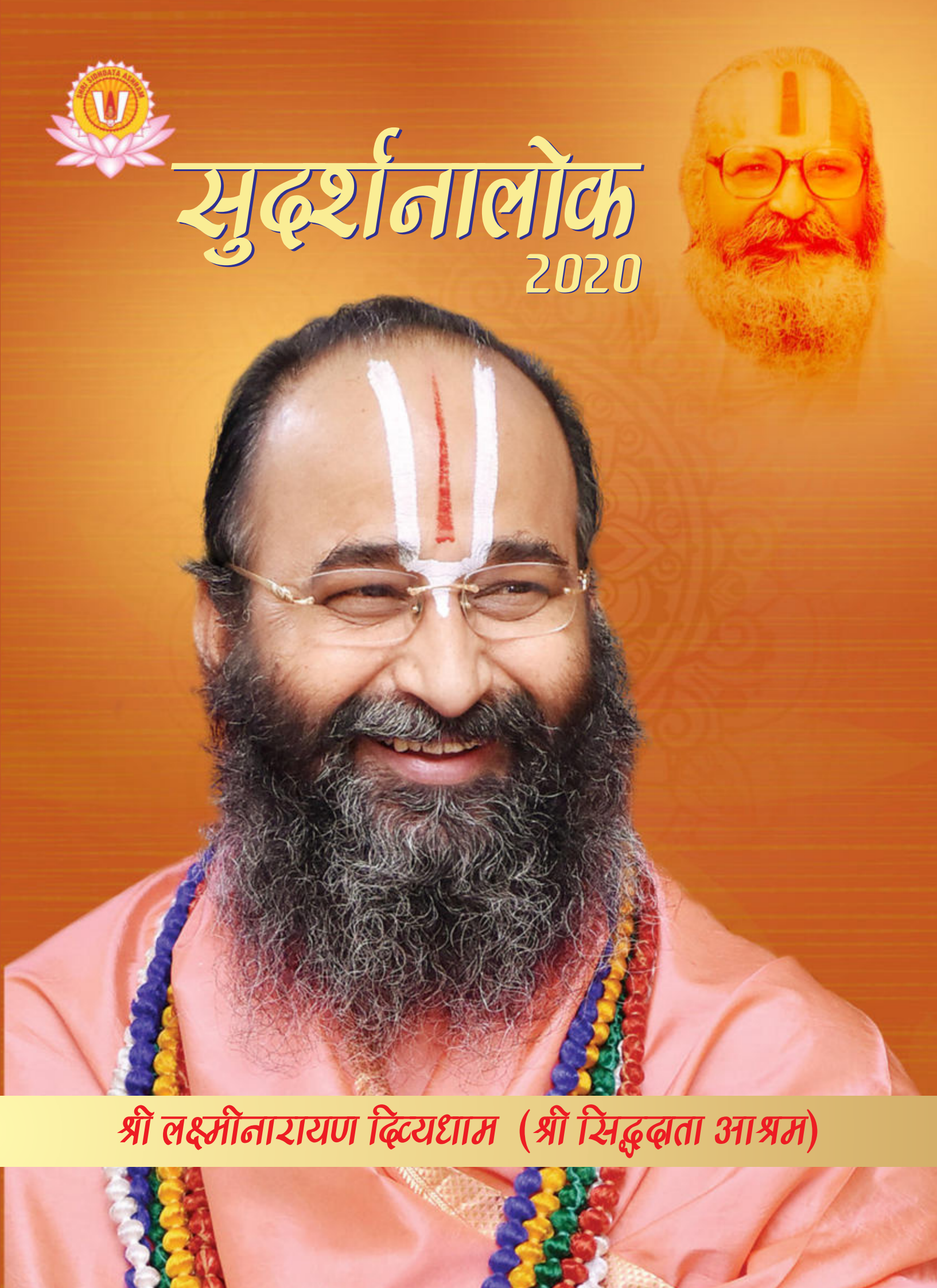

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)

"परमात्मा की कृपा से मिले मानव शरीर का सदुपयोग
इसी में है कि आप मानवतापूर्ण कार्य करो।"

वै. श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज

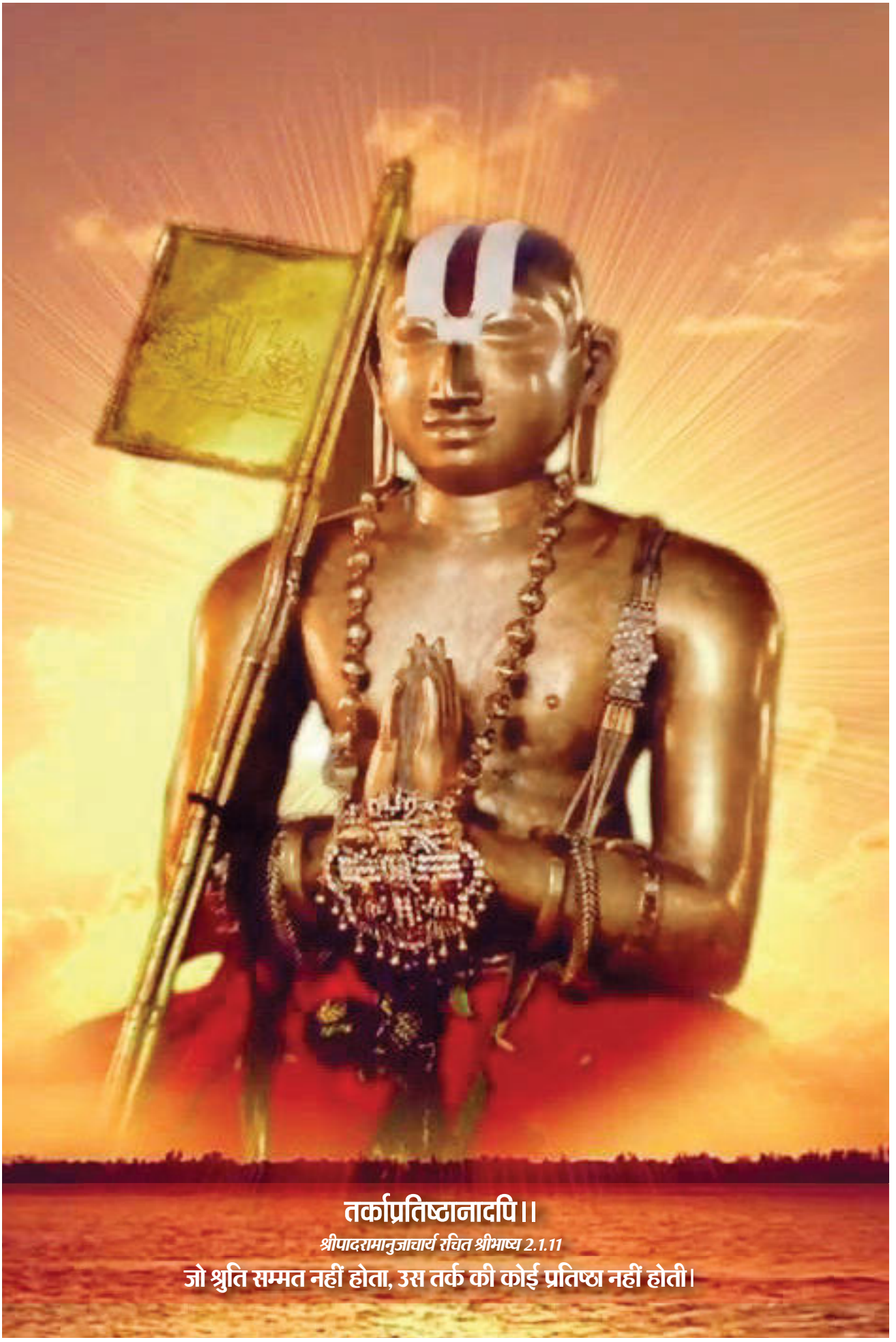
तर्काप्रतिष्ठानादपि।।
श्रीपादरामानुजाचार्य रचित श्रीभाष्य 2.1.11
जो श्रुति सम्मत नहीं होता, उस तर्क की कोई प्रतिष्ठा नहीं होती।

श्री गुरु-परंपरा

कल्पायुषां स्थानजयात् पुनर्भवात् क्षणायुषां भारतभूजयो वरम्।।
कहा गया है कि -ब्रह्मा के कल्प जितना जीवन जीने वाले देवगण बार-बार देवलोक में ही जन्म पाते हैं अर्थात् उनको मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती जबकि भारतभूमि में जन्म लेने वाले कीट-पतंग भी गुरुजनों के चरण रज से मोक्ष पा जाते हैं।

यहां की धरती में भगवान का नाम है, गुरुओं के उपदेशों की गूंज से यहां मानवता की स्थापना होती है।

हमारे श्री सद्गुरुदेव भगवान (वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज) ने इसी पावन धरती पर पाड़ला (करौली, राजस्थान) नामक गांव में मनुष्य देह को धारण किया, जिन्होंने थोड़े ही समय में मानवता की राह पर लाखों लोगों को चलना सिखाया। मनुष्य स्वरूप को माध्यम बनाने वाले इन दिव्यात्मा ने बालपन से ही धार्मिक क्रियाकलापों में रूचि लेना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने अनेकानेक प्रकार की कठिन तपश्चर्याओं को कर श्री भगवान की कृपा प्राप्त की और धीरे-धीरे मानवता के संदेश के प्रचार-प्रसार के लिए एक संस्थान स्थापित कर दिया। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनके शिष्यों के विशाल समूहों को देखने से मिलता है।

उनका दिव्य व्यक्तित्व बड़े-बड़े राजाओं, महाराजाओं व देवगणों के रूप लावण्य को भी पीछे छोड़ता था। जिसपर उनकी एक नजर पड़ गई उसका जीवन धन्य हो गया, ऐसी तेजोमय दृष्टि।

उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति को जाति-मजहब की संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर केवल और केवल मानव होना सिखाया। उनके इस आंदोलन ने मानवता को नई राह और मजबूती प्रदान की। जातियों में बंटे समाज को एकसूत्र में बांधकर श्रीमन् नारायण की भक्ति में लगा दिया। ऐसी भक्ति में कि भक्त और भगवान के बीच कुछ भी शेष ना रह पाये।

बाबा के इस दिव्य तेज को संजोकर समस्त संसार को को अध्यात्म के तेज से आलोकित कर रहे वर्तमान पीठाधीश्वर अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के चरित्र को भी शब्दों में नहीं बांधा जा सकता अपितु उनके दिव्य साकार कार्य अवश्य ही लोगों को जीवन जीने की कला सिखा रहे हैं।

अपने दिव्य आलोक से असंख्य जनों के हृदयों को प्रकाशित करने वाले, स्त्री-पुरूष को समान अवसर व स्थान समाज में दिलवाने वाले, असंख्य जनों को गृहस्थ जीवन में ही सन्यास का सुख प्रदान कराने वाले, केवल और केवल मानवता को एक धर्म व विचार स्थापित करने वाले, असंख्य भटकों को सही राह दिखाने वाले, आचार्य सम्प्रदाय को जन-जन तक पहुंचाने वाले, शुद्ध भक्ति मार्ग के प्रवर्तक व पवित्रता एवं सदाचार के बोधक श्री गुरु महाराज ही सब शिष्यों के लिए सर्वोच्च सत्ता हैं। वह भगवान का बोध कराने वाले होने से भी भगवान के पूर्व ही नाम लेने योग्य हैं।

हमारा सौभाग्य है कि हमें आचार्यकृपा प्राप्त हुई और हम श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम का आश्रय प्राप्त कर सके। हमसे पहले भी असंख्य ने यहां कृपा प्राप्त की और हमारे बाद भी असंख्य यहां कृपाएं प्राप्त करेंगे।

हमारे आचार्यश्री ऐसे आचार्य सम्प्रदाय के अभिन्न अंग हैं जिनके प्रवर्तक आचार्य भगवान् श्रीमन् नारायण ही हैं। श्री लक्ष्मी जी द्वारा जीवों के कल्याण की बात करने पर श्री भगवान ने उन्हें अष्टाक्षर मंत्र, द्वय मंत्र आदि सभी मंत्रों का रहस्य बताया। श्री लक्ष्मी जी ने इन रहस्यों को श्री विष्वकसेन जी को प्रदान किया। उन्होंने श्री शठकोप स्वामी को यह बताया, मुनिजी से श्रीनाथ मुनिस्वामी जी को यह प्राप्त हुआ। तदुपरांत श्री पुण्डरीकाक्ष स्वामी व उनके बाद श्री राममिश्र स्वामी जी को यह मंत्र प्राप्त हुए। श्री राममिश्र स्वामी जी से श्री यामुनाचार्य स्वामी जी को व उनके उत्तराधिकार को श्री महापूर्ण स्वामी जी ने संभाला, जिन्होंने श्री रामानुज स्वामी जी को यह मंत्र प्रदान किये।

आज आचार्य सम्प्रदाय को भाष्यकार रामानुज स्वामी जी के ही नाम पर रामानुज सम्प्रदाय के नाम से भी जाना जाता है। भाष्यकार रामानुज स्वामी जी ने श्रीभाष्य में लिखा है कि

तर्काप्रतिष्ठानादपि।। 2.1.11

अर्थात् जो श्रुति सम्मत नहीं होता, उस तर्क की कोई प्रतिष्ठा नहीं होती। ऐसे में हम आपको जो गुरु परंपरा दिखा और बता रहे हैं वह श्रुति सम्मत भी है और प्रतिष्ठा योग्य भी है।

हमारे आचार्य एक श्रुतिसम्मत परंपरा में आए हैं, कोई मन्मना धर्म प्रतिष्ठित नहीं किए हैं। अतः यहां दिया जाने वाला संदेश प्रतिष्ठा योग्य है। ऐसा श्रीभाष्य द्वारा भी प्रतिष्ठित जान पड़ता है।

हमारे आचार्यश्री की वाणी में सभी सद्ग्रंथों का सरल भाषा में सार दे दिया गया है। सीधी और सरल भाषा में श्री गुरु महाराज कहते हैं कि उस (भगवान) पर विश्वास करके तो देखो, वो तुम्हारे सब दुख दूर कर देगा। मैं तुम्हारी वकालत करूंगा।

श्री महाराज द्वारा जीवमात्र के कल्याणार्थ ही श्री सिद्धदाता आश्रम की स्थापना की। इसी आश्रम परिसर में एक विशाल श्री लक्ष्मी नारायण दिव्य धाम (मन्दिर) की स्थापना कर एक शक्तिपीठ का उदय भी किया गया है। श्रीगुरु महाराज कहते हैं कि यहां अनन्त काल तक असंख्य जनों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती ही रहेगी। आचार्य सम्प्रदाय की कीर्ति बढ़ाने वाले श्री सद्गुरुदेव भगवान ने सर्व कार्यों को सिद्ध करने वाली मां सिद्धदात्री की शक्तियों को यहां स्थापित किया है। हमारी आपश्री से प्रार्थना है कि अपने जीवन के अमूल्य समय में थोड़ा समय निकालकर श्री गुरु परंपरा में स्थापित इस दिव्य गंगा में मानसिक स्नान करने अवश्य ही आइए।

श्रीमते रामानुजाय नमः श्रीं श्रियै नमः श्री गुरवे नमः

सुदर्शनालोक

स्मारिका | 2020

आशीर्वाद प्रदाता
वैकुण्ठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज

संरक्षक
अनन्त श्रीविभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा
पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य
स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

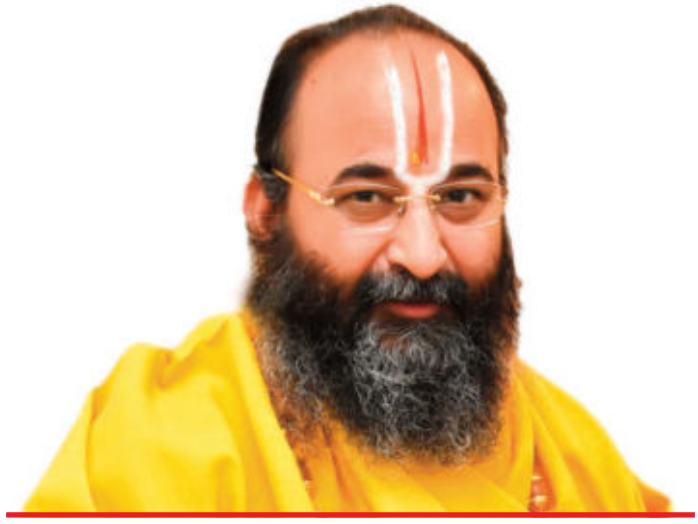

परामर्श मण्डल
डी.सी. तंवर
जगदीश सोमानी

सम्पादक
शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

सह सम्पादक
राजकुमार भारद्वाज

प्रकाशक
श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)
जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट
बड़खल-सूरजकुंड मार्ग, सैक्टर-44, फरीदाबाद-121012 (हरियाणा) भारत
दूरभाष : 0129- 2419717, 2419555, 9910907109
website : www.shrisda.org email: info@shrisidhdataashram.org

अनुक्रम.....

क्र.सं	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	परमपद प्रदान कराने वाले भाष्यकार रामानुज स्वामी		2
2.	सम्पादकीय	शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'	5
3.	संदेश		6-29
4.	नाम जाप	वै. श्रीमद् ज.गु.रा.स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज	30-33
5.	सेवा का सुफल	श्रीमद् ज.गु.रा.स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी	34-35
6.	गोदा अम्माजी	श्री श्री जगद्गुरु रामानुचार्य स्वामी राजनारायणचार्य जी महाराज	36-37
7.	जल की महिमाः भारतीय संस्कृति में	महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री	38-40
8.	Ramanujacharya's Philosophy of Education	Prof. M.A.Lakshamithathacharya	41-43
9.	INDIA: A FUTURE WORLD POWER	Dr. Karan Singh	44
10.	आधुनिक समाज में ज्योतिष की उपयोगिता	के.एन.राव	45-47
11.	बोल रहा है सब संसार, बाबा तेरी जय-जयकार...		48-49
12.	श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)		50
13.	निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा - "प्रथम सुख निरोगी काया"		51
14.	"गुरुकुल" : संस्कृत से संस्कृति की रक्षा		52-53
15.	पुस्तकालय - "एक ज्ञान कोष"		54
16.	भोजनालय : 'मानवमात्र की सेवा में समर्पित'		55
17.	'मानव सेवा सर्वोपरि सेवा'		56-57
18.	गौ सेवा		58
19.	नामदान : 'सतगुरु का दिया दिव्यधन'		59
20.	प्रयागराज महाकुंभ-2019		60-65
21.	सौर ऊर्जा पावर प्लांट : एक कदम स्वच्छ पर्यावरण की ओर		66-67
22.	गुरु दर्शन को पहुंचे विशिष्ट भक्तजन		70-79
23.	संत मिलन		80-81
24.	प्रवास		82-85
25.	सूर्य की एक और परिक्रमा		86-87
26.	होरिया में उड़ा रे गुलाल		88-89
27.	भये प्रकट कृपाला दीन दयाला...		90
28.	महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी		91
29.	वैभवपूर्ण तरीके से मनाया द्वादशम् ब्रह्मोत्सव		92-95
30.	रामानुज जयंती		96
31.	भगवान नृहसिंह जयंती		97
32.	बाबा की पुण्यतिथि		98-99
33.	"आनंदोत्सव"		100-101
34.	गुरु पूर्णिमा		102-103
35.	ॐ नमः शिवाय, शिवजी सदा सहाय।		104-105
36.	हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैयालाल की...		106-107
37.	माता के नवरात्रे एवं दशहरा पर्व		108-109
38.	दान		110
39.	21000 दीपक प्रज्वलित कर मनाई दिपावली		111-113
40.	गोवर्धन पूजा		114
41.	गोपाष्टमी		115
42.	गीता जयंती महोत्सव : श्री सिद्धदाता आश्रम को मिले दो सम्मान		116-117
43.	श्री सिद्धदाता आश्रम आने का मानचित्र		118
44.	श्री सिद्धदाता आश्रम - मुख्य पर्व एवं अन्य कार्यक्रम का अनुक्रम		119
45.	श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम - समय सारणी		120

सम्पादकीय

शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'
संपादक - श्री सुदर्शन संदेश (मासिक) एवं सुदर्शनालोक (वार्षिकी)

मेरे तो वही हैं जो मीरा के थे !

श्री गुरु महाराज ने हजारों-लाखों लोगों को सत्संग के माध्यम से जोड़ा और उन्हें भगवान् की भक्ति में लगाया। भगवान की भक्ति में लगे यह असंख्य नर-नारि श्री गुरु महाराज की शिक्षा को प्रसार-प्रचार दें मेरी यही कामना है। जो व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को भगवान की भक्ति में लगने के लिये प्रेरित करता है वह बड़े भारी पुण्य का भागी होता है।

भक्ति का पद ज्ञान से भी बढ़कर बताया गया है। ज्ञान अज्ञान का नाश करता है जबकि भक्ति प्रेम की मात्रा में क्षण प्रतिक्षण बढ़ोत्तरी करती है। हृदय प्रेम से भर देती है। इस प्रेम में विशेष आकर्षण है तो विरह भी है। यह विशेष है।

यह भक्त और भगवान को निकटता और निकटता फिर अभिन्नता प्रदान करती है। इससे भगवान अपने भक्त के वश में हो जाते हैं यानि प्रेम के वशीभूत होकर, अपने शरणागत की कुशलक्षेम का ध्यान वह स्वयं ही रखते हैं। कभी भी बुरा नहीं होने देते।

भगवान को ही स्मरण करता हुआ व्यक्ति इस मृत्युलोक पर सद्कर्मों को करता हुआ परमलोक को प्राप्त होता है। यानि मोक्ष की प्राप्ति करता है। महाभारत में कहा गया, गीता में कहा गया कि भगवान के नाम का जाप करने वाला मोक्ष को प्राप्त होता है और वह बार-बार अनेकानेक गर्भों की यात्रा से बचकर श्रेष्ठ जीवन- उस प्रभु के सान्निध्य में जीता है।

एक बार मन से शरणागत हो जायें। बाकी का कुशलक्षेम पूछना, करना उन परम दयालू भगवान की जिम्मेदारी हो जाती है। ऐसे शरणागत को भगवान ने गीता के 18वें अध्याय के 64वें श्लोक में 'सर्वगुह्यतम वचन' कहा है।

ऐसी शरणागति जैसी मीरा ने ली- 'मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई। केवल इतने भर से वह भगवान की और भगवान उसके हो गये। केवल नाम लेने से लेकिन उस नाम लेने में है भाव। भाव जो आम इंसान को मीरा बना दे। ऐसा भाव रखो कि सबकी सेवा करूंगा लेकिन आशा नहीं रखूंगा। सेवा के बदले सेवा की अथवा अन्य किसी वस्तु की आशा की तो सब व्यर्थ है। भगवान के नाम पर सेवा करना ही सर्वोत्तम है। ध्यान रखें कि जीवन जीने के लिये किये कर्मों की बात नहीं हो रही है। यह है अध्यात्म की बात। अध्यात्म जिसमें एक गुरु हैं, एक भगवान हैं, सत्संग है और है मानवता। पूरी मानव जाति इसी के आस-पास घूमती है। इसकी रचना ही इस प्रकार से की गई है। जैसे बेर के पेड़ पर बेर ही आएंगे आम नहीं आते उसी प्रकार मानव का गहना मानवता ही है अन्य कुछ नहीं। श्री भगवान ने गुरु की महिमा को बताते हुए कहा है- 'स महात्मा सुदुर्लभः' (गीता 7/19)

और अपने लिए कह रहे हैं- 'तस्याहं सुलभः' (गीता 8/14) गुरुजनों को दुर्लभ और स्वयं को सुलभ कह रहे हैं। लेकिन कब होंगे सुलभ जब उनकी शरणागति लोगे और शरणागति देने वाले हैं गुरुजन। गुरु ही बताते हैं संसार और भगवान का अन्तर, वही बताते हैं शरीर और आत्मा का अन्तर। संसार और शरीर एक ही हैं और आत्मा और भगवान एक हैं।

निःसंदेह मुझे श्री सिद्धदाता आश्रम से जुड़ने के बाद असीम कृपाएं प्राप्त हुई हैं फिर भी कहूंगा कि मुझ पर उनकी कृपाएं न भी हों तो मैं मीरा हो चुका हूं। हमें पता ही नहीं चलता कि वह क्या करता है लेकिन जो भी इस जीवन में होता है वह उसकी रजा में होता है...

जय गुरुदेव!

SRIMANNARAYANA RAMANUJA YATHIBHYO NAMAHA

Tridandi Chinna Srimannarayana Ramanuja Jeeyar Swamy
JEEYAR INTEGRATED VEDIC ACADEMY
SRIRAM NAGARAM -509325
R.R DISTRICT. T.S.

जय श्रीमन्नारायण !

प्रिय भगवद्बन्धो
जय श्रीमन्नारायण
अनेकानि मङ्गलाशासनानि!

जानकर हर्ष हुआ कि श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा अपनी वार्षिकी श्री सुदर्शनालोक का इस वर्ष भी प्रकाशन हो रहा है। हमें विश्वास है कि पत्रिका की सार्थकता सनातन धरोहर के प्रचार व प्रसार में सिद्ध होगी। जिससे धर्मप्रेमी जन लाभ उठावेंगे। हमें जानकर अच्छा लगता है कि प्रकाशन के माध्यम से श्री गुरु महिमा, सत्संग, धार्मिक पर्वों एवं धर्म गुरुओं के सारगर्भित लेख जन-जन तक पहुंचेंगे।

वास्तव में भारतभूमि अनादिकाल से महान् साधु-सन्तों, महात्माओं एवं ऋषि-मुनियों की चिन्तन मनन की कर्म भूमि रही है। यहां समय-समय पर महान् विभूतियों ने जन्म लेकर अपने तप, त्याग, कर्मयोग एवं ज्ञान से प्राणिमात्र का कल्याण किया। इसी परंपरा में वैकुण्ठवासी अनन्त श्रीविभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित 'श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम' एवं 'श्री सिद्धदाता आश्रम' अपनी विशिष्ठ भूमिका निभा रहा है। यह स्थान अति पावन व चमत्कारिक है। वर्तमान में श्रद्धेय श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के पावन सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में श्री गुरु महाराज जी की शिक्षाओं को असंख्य भक्तगणों तक पहुंचाकर उन्हें मोक्ष के सरल मार्ग पर ले जा रहे हैं।

इस अलौकिक कार्य को निष्पादित करने के लिए मैं सभी आश्रम बंधुओं को मंगलाशासन करता हूं।

जयश्रीमन्नारायण
21.12.2019

(श्री श्री श्री त्रिदण्डि चिन्न श्रीमन्नारायण रामानुज जीयर स्वामी जी)

www.chinnajeeyar.org

।। श्री ।।
।। श्रीमते रामानुजाय नमः ।। ।। श्री वादिभीकर महागुरवे नमः ।।
श्री श्रीनिवास वेंकटेश्वर तिरुपतिबालाजी भगवान के दिव्यश्रीपादुका सेवक :-
श्री श्री जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी राजनारायणाचार्य जी
अध्यक्ष
श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर देवस्थानम्
भक्ति वाटिका, रामानुजाचार्य मार्ग, कसया रोड, देवरिया-274 001 (उ० प्र०) दूरभाष : (05568) 241479
ईमेल : bhaktivatika@gmail.com, वेब : www.bhaktivatika.com

क्रमांक ..... दिनांक : 12.12.2019

श्रियै नमः

"मंगलाशासन पत्र"

श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम की स्थापना सिद्धपुरूष श्री 1008 जगद्गुरू रामानुजाचार्य हरियाणा एवं इन्द्रप्रस्थ पीठाधीश्वर स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज के द्वारा हुई थी जिसकी महिमा से विश्व के प्राय लोग परिचित हैं। महाराज श्री ने जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा जनहित में मानवमात्र की सेवा का दृढ़ संकल्प लिया था जिसका सुन्दर ढंग से संचालन वर्तमान गद्दीनसीन श्री 1008 जगदगुरू रामानुजाचार्य हरियाणा एवं इन्द्रप्रस्थ पीठाधीश्वर स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज कर रहे हैं। वर्तमान पीठाधीश्वर जी विद्या, विनय सम्पन्न सहज, मृदुभाषी एवं अपने पूर्व के आचार्य की तरह 'सिद्ध' हैं। सुना है इनके श्रीलक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, फरीदाबाद (हरियाणा) से कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटता है अस्तु। इस महिमाशाली संस्था के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सुदर्शनालोक' स्मारिका 2020 ई. की मंगलाशासन करते श्रीकृष्ण भगवान से प्रार्थना करता हूं कि ये स्मारिका भविष्य में भी सम्पूर्ण विश्व को आदर्श जीवन जीने की शिक्षा देती रहे।

'इति शम्'

(श्री जगद्गुरु रामानुजाचार्य
स्वामी राजनारायणाचार्य जी महाराज)

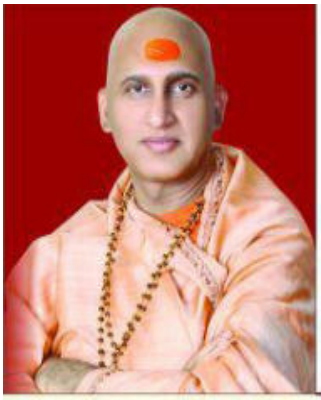

॥श्रीःकृपा॥

Master Seat :
HARIHAR ASHRAM
M.G. Road, Kankhal, Haridwar - 249 408 (Uttarakhand) INDIA
Phone : +91 1334 246974 • Fax : +91 1334 246973

Junapeethadheeshwar Acharya
Mahamandleshwar
Swami Avdheshanand Giri

Founder :
Prabhu Premi Sangh Charitable Trust
Prabhu Prem Ashram, Jagadhari Raod,
Ambala Cantt. 133 006 (Haryana) INDIA
Phones : +91 171 2699335
Fax : +91 171 2699367
Website : www.prabhupremisangh.org
e-mail : pps.ambala@gmail.com
prabhuprem@hotmail.com
AvdheshanandG

President
Hindu Dharma Acharya Sabha
The Voice of Collective Consciousness

President
Bharat Mata Mandir
Samanvay Seva Trust
Samanvay Kutir, Sapt Sarovar,
Bhupatwala, Haridwar - 249 410
Ph. +91-1334-260256; 326190
Fax +91-1334-260981
email - bharat.samanvaya@yahoo.in

शुभकामना संदेश

दिनांक – 24.12.2019

आदरणीय बन्धुवर
सादर ॐ नमो नारायणाय !!

यह अत्यन्त आनन्द का विषय है कि **जनहित सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट** द्वारा 'सुदर्शनालोक स्मारिका वर्ष -2020' नये वार्षिक अंक का प्रकाशन हो रहा है।

भारत की सांस्कृतिक–आध्यात्मिक चेतना के अभिरक्षण व प्रसार में भारत की अति प्राचीन संस्कृति और कला का अभूतपूर्व योगदान है। विश्व में अनेक संस्कृतियों का उद्‌भव हुआ, वो चर्मोत्कर्ष को प्राप्त हुईं और विनष्ट हो गईं। किन्तु अपनी दिव्य आध्यात्मिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों के समवेत भारत की कालजयी–मृत्यंजयी सनातन वैदिक संस्कृति चिरकाल से अस्तित्व में है।

भारतवर्ष के जिस महान संस्कृति के उदर में राम का रामत्व, कृष्ण का पाण्डित्य, गीता, वेद, पुराण आदि पुष्पित–पल्लवित हुए हों, उसकी विविध धाराओं के रक्षण–संवर्धन और प्रसार का कार्य संस्था द्वारा किया जा रहा है।

लोकसंग्रह के साथ साहित्य जब लोकोपकार में प्रवृत्त हो जाएं तो यह और भी समृद्ध हो जाता है। मैं यह जानकर अत्यन्त हर्षित हूँ कि **जनहित सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट** का यह कार्यक्रम भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के रक्षण व संवर्धन के लिए समर्पित है। आपकी सृजनात्मकता और लोकोपकारी प्रवृतियां अत्यन्त आह्लादित करने वाली है।

स्मारिका के प्रकाशन पर अपनी शुभकामनाएं सम्प्रेषित कर रहा हूँ।

आपका शुभेच्छु

(स्वामी अवधेशानन्द गिरि)
जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर

प्रियबन्धु!

आपकी पत्रिका के माध्यम से जो लोककल्याण अनुष्ठान हो रहा है तदर्थ हार्दिक शुभकामनायें। आपकी संस्था जिस लोकमंगलकर अनुष्ठान, आयोजन में संलग्न है- उनकी सफलता के हेतु शुभ-कामनायें।

शुभमस्तु!

भवदीय:

कार्ष्णि

श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम,
श्री रमणरेती धाम, महावन 281305 (गोकुल), जिला-मथुरा दूरभाष : (05661) 272225, 272065

शुभकामना संदेश

भारतीय सांस्कृतिक परम्परायें समूचे विश्व में शांति सद्भाव कि न केवल तर्कसंगत अचूक प्रेरणा है अपितु वर्तमान की प्रबल आवश्यकता भी है। संत इन परम्पराओं के ध्वजवाहक हैं और मठ-मन्दिर, आश्रम इन्ही प्रेरणाओं के केन्द्र। संतों एवं धर्म स्थलों का यही स्वरूप भारतीय अध्यात्म का गौरव है, जिसके सुरक्षित रहने से ही परम्पराऐं संरक्षित रह सकती हैं।

हार्दिक प्रसन्नता है कि श्री सिद्धदाता आश्रम (फरीदाबाद) वर्षो वर्ष से इसी भावगरिमा से प्रेरक भूमिका निभा रहा है। पूज्यपाद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज की समर्पित-संकल्पित अध्यात्म निष्ठा और उसी को संरक्षित-संवर्द्धित करने का संकल्प वर्तमान पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज द्वारा वास्तव में स्तुत्य है। शिक्षा का क्षेत्र हो या अन्यान्य सामाजिक सेवाओं का - जनहित सेवा चैरीटेबल ट्रस्ट की सदैव अग्रणी आदर्श भूमिका रही है।

यह भूमिका जन जन की व्यापक प्रेरणा बनें - इस हेतु से प्रकाशित हो रही स्मारिका 'सदुर्शनालोक' एवं ट्रस्ट के समर्पित सेवा सद्भाव को हमारी हार्दिक शुभकामना।

(स्वामी श्री ज्ञानानंद जी)

श्री कृष्ण कृपा धाम, परिक्रमा मार्ग, श्रीवृन्दावन (मथुरा) 281121
0565-2540106, 2540418 gieogita@gmail.com, website : gieogita.com

ओ३म्
पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट)
Patanjali Yogpeeth (Trust)

क्रमांक
S.No. : .....

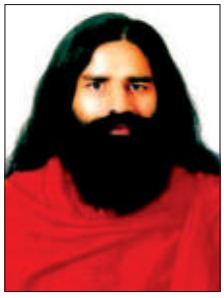

शुभकामना संदेश

अति हर्ष का विषय है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट (संचालक : श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद) हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी **सुदर्शनालोक-2020** का प्रकाशन करने जा रहा है। इस स्मारिका मैं संस्था की साल भर की गतिविधियों के साथ साथ अनेक विद्वानों व धर्मगुरुओं के समाज उपयोगी लेखों का भी संग्रह होता है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जाता है वहीं संस्कृत और संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए एक महाविद्यालय भी चलाया जा रहा है जिसमें बच्चों को शास्त्री तक निःशुल्क आवासीय शिक्षा दी जा रही है। आश्रम द्वारा चलने वाली पर्यावरण, समाज कल्याण की अन्य गतिविधियां पौधारोपण, वस्त्र वितरण, स्वास्थ्य सुविधाएं आदि भी निसंदेह प्रशंसा के पात्र हैं। श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के कुशल निर्देशन में आश्रम द्वारा चलाई जा रही इन सभी धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के बारे में जानकर बहुत अभिभूत हूं और ईश्वर से इनके निरंतर प्रगति की कामना करता हूं।

पतंजलि योगपीठ भी देश और समाजहित के ऐसे अनेक कार्यों को कर रहा है जिससे हमारे देश को एक नई दिशा और उज्जवल भविष्य प्राप्त होगा। मेरा मानना है कि धार्मिक संस्थाएं यदि इस प्रकार की गतिविधियों को बढ़ावा दें तो समाज से अनेक बुराइयों को समाप्त करने में सफलता प्राप्त होगी।

मैं श्री सिद्धधाता आश्रम चहुँमुखी विकास और समाजहित व जन उपयोगी **स्मारिका सुदर्शनालोक 2020** के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

धन्यवाद।

(स्वामी रामदेव)
अध्यक्ष

सम्पर्क कार्यालय : महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249405, उत्तराखण्ड (भारत)
Contact Office : Maharishi Dayanand Gram, Delhi-Haridwar National Highway, Near Bahadrabad, Haridwar-249405, Uttarakhand, India
Tel. : 01334-240008, 246737, 248888 Fax : 01334-244805, 240664 E-mail : divyayoga@rediffmail.com, info@divyayoga.com Web : www.divyayoga.com

सतपाल महाराज
मंत्री
SATPAL MAHARAJ
Minister

उत्तराखण्ड सरकार

पर्यटन, सिंचाई, लघु सिंचाई, संस्कृति, जलागम प्रबंधन,
तीर्थाटन एवं धार्मिक मेले, बाढ़ नियंत्रण, वर्षा जल संग्रहण,
भारत-नेपाल उत्तराखण्ड नदी परियोजनायें
उत्तराखण्ड सरकार
Tourism, Irrigation, Minor Irrigation, Culture, Watershed Management,
Pilgrimage and Religious Fairs, Flood Control, Rain Water Harvesting,
India-Nepal-Uttarakhand River Projects
Goverment of Uttarakhand

पत्रांक– 5 /मंत्री/29–सन्देश/2019–20
दिनांक– 06, जनवरी, 2020

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि श्री सिद्धदाता आश्रम फरीदाबाद द्वारा संचालित जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी **सुदर्शनालोक स्मारिका वर्ष–2020** का प्रकाशन करने जा रहा है जिसमें संस्था की वर्ष भर की गतिविधियों के साथ-साथ अनेक विद्वानों एवं धर्मगुरूओं के समाजोपयोगी लेखों का भी संग्रह किया जाएगा। यह प्रसन्नता की बात है कि जहां आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया रहा है वहीं संस्कृत और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए एक महाविद्यालय भी संचालित किया जा रहा है जिसमें छात्रों को शास्त्री तक निःशुल्क आवासीय शिक्षा दी जाती है। आश्रम द्वारा चलने वाली पर्यावरण जन-कल्याण की अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियां जैसे वृक्षारोपण, वस्त्र वितरण, स्वास्थ्य सुविधाएं आदि जनहित कार्यों को किया जा रहा है। ऐसे कार्यो से देश को एक नई दिशा मिलेगी ऐसा मेरा विश्वास है। मेरा मानना है कि यदि अन्य संस्थाएं भी इस प्रकार की गतिविधियों को बढ़ावा दें तो समाज से अनेक बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है।

इस अवसर पर मैं आपकी संस्था श्री सिद्धदाता आश्रम के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए संस्था द्वारा प्रकाशित होने वाली वार्षिक **सुदर्शनालोक स्मारिका वर्ष–2020** के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(सतपाल महाराज)

कार्यालय - विधान सभा भवन, देहरादून दूरभाष : (0135) 2666377 फैक्स : (0135) 2666380 आवास - 1/1 सर्कुलर रोड, डालनवाला, देहरादून दूरभाष : (0135) 2654514, 9810990009
ई-मेल : writeto@satpalmaharaj.in वेबसाइट : www.satpalmaharaj.in

॥ गायत्री विजयतेतराम् ॥

सम्पर्क सूत्र : 9463600003

श्री पंच अग्नि अखाड़ा

(अधिनियम 21 सन् 1860 अंतर्गत पंजीकृत संख्या 1166/65-66)

श्री श्री 108 तपोनिष्ठ अग्निहोत्री
श्री महन्त सम्पूर्णानन्द ब्रह्मचारी
सचिव

मुख्य केन्द्र -
11/30 सी, नया महादेव, राजघाट,
वाराणसी - 221001 (उत्तर प्रदेश)

क्रमांक.....

दिनांक.....

जानकर अति प्रसन्नता हुई कि फरीदाबाद में जनहित सेवा चैरिटबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी **'सुदर्शनालोक 2020'** का प्रकाशन करने जा रहा है। जिसमें संस्था की गतिविधियों सहित समाज उपयोगी लेखों का भी संग्रह होता है। श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के कुशल नेतृत्व में आश्रम द्वारा चलाई जा रही विभिन्न धार्मिक,सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के बारे में जानकर अभिभूत हूं और इनके निरंतर प्रगति की कामना करता हूं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जाता है वहीं संस्कृत और संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए एक महाविद्यालय भी चलाया जा रहा है जिसमें बच्चों को शास्त्री तक निःशुल्क शिक्षा के साथ आवासीय सुविधाएं भी दी जाती हैं। आश्रम द्वारा संचालित पर्यावरण, समाज कल्याण की अन्य गतिविधियों में वृक्षारोपण, वस्त्र वितरण, स्वास्थ्य सुविधाएं आदि भी असमर्थजनों को सहर्ष प्रदान की जाती हैं।

संस्था निसंदेह प्रशंसा की पात्र है।

मैं समझता हूं कि धार्मिक संस्थाएं यदि इस प्रकार की गतिविधियों को बढ़ावा दें तो समाज से अनेक बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है।

मैं संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति और सुंदर एवं जन उपयोगी वार्षिकी सुदर्शनालोक 2020 के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता हूँ।

धन्यवाद।

भवदीय
श्री श्री 108 तपोनिष्ठ अग्निहोत्री
श्री महन्त सम्पूर्णानन्द ब्रह्मचारी
सचिव :
श्री पंच अग्नि अखाड़ा

॥ ॥ ॥

Pranab Mukherjee

14th February, 2020

Message

I am happy to know that the Janhit Sewa Charitable Trust, Faridabad is bringing out the annual issue of **"SUDARSHANALOK-Smarika Varsh 2020".**

I extend my warm greetings and felicitations to all those associated with the Janhit Sewa Charitable Trust.

I Wish the publication all success.

(Pranab Mukherjee)

10, RAJAJI MARG, NEW DELHI - 110 011

अमित शाह
AMIT SHAH

सत्यमेव जयते

गृह मंत्री
भारत
HOME MINISTER
INDIA

Message

I am happy to note that Janhit Sewa Charitable Trust, Shri Siddhdata Ashram, Faridabad (Haryana) is bringing out its annual issue of **"SUDARSHANALOK-Smarika Varsh 2020"** with the aim to provide Socio-academic-religious literature in the larger interest of the mankind and to ensure harmony in the world.

The outstanding work of Shri Siddhdata Ashram operated by Janhit Sewa Charitable Trust, in the field of religious, social, environmental activities is undoubtedly laudable.

I convey my best wishes to the publication of annual issue of **"SUDARSHANALOK-Smarika Varsh 2020".**

(Amit Shah)

Office : Ministry of Home Affairs, North Block, New Delhi-110001
Tel. : 23092462, 23094686, Fax : 23094221
E-mail : hm@nic.in

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA

Date : 20-12-2019

Message

I am happy to know that **Janhit Sewa Charitable Trust (Haryana)** is bringing out its annual issue of **'Sudarshanalok-Smarika Varsh 2020'.** in which will be included of views & articles from renowned academicians, social workers & Gurus.

I congratulate all the members who are associated with this **'Janhit Sewa Charitable Trust'** and wish for souvenir's successful publication.

With good wishes,

(Rajnath Singh)

Office : Room No. 104, Ministry of Defence, South Block, New Delhi-110011
Tel. : +91 11 23012286, +91 11 23019030, Fax : +91 11 23015403
E-mail : rmo@mod.nic.in

नितिन गडकरी
NITIN GADKARI

मंत्री
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग;
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम
भारत सरकार
Minister
Road Transport and Highways;
Micro, Small and Medium Enterprises
Government of India

15 DEC 2019

Message

It gives me immense pleasure to know that the Janahit Sewa Charitable Trust is bringing out annual issue of Sudarshanlok — Smarika Varsh 2020. | extend my best wishes to the Smarika and wish my best wishes to the social,religious work of the trust.

I am informed that the Sidhdata Ashram public welfare and charitableactivities are being carried on under the keen supervision of Janhit Seva Charitable Trust since the time of Vaikunthvasi Shrimad Jagadguru Ramanujacharya Swami Sudarshanacharyaji Maharaj.

Various programs in respect of Education, Naamdhan, Health Awareness, Satsang, Environmental Initiatives and Public Welfare activities are undertakenwhich are public beneficial across the borders of the country and is the sole and legacy of the Indian Culture.The yearly effort of the trust to release the Smarika in the interest of the social, academic, religious literature in the larger interest of the mankind and

to ensure harmony in the world is appreciable as it includes the articles related with the field of academics, philanthropy, social and religious work.

Again, I extend my best wishes to the release of Smarika, laude the work of the trust and wish success to the future efforts of the trust and would be happy to be part of the noble work in the future.

With Regards !

Yours

(Nitin Gadkari)

राज्यपाल हरियाणा
GOVERNOR HARYANA

हरियाणा राज भवन,
चण्डीगढ़ - 160019
HARYANA RAJ BHAVAN,
CHANDIGARH - 160019

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद, अपनी वार्षिक **'सुदर्शनालोक'** नामक स्मारिका वर्ष 2020 का प्रकाशन कर रहा है।

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट स्मारिका के माध्यम से मानव जाति में शान्ति, सद्भाव सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक-शैक्षणिक-धार्मिक साहित्य प्रदान करना है। इस प्रकाशन में शामिल प्रसिद्ध शिक्षाविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और धार्मिक गुरुओं के विचार और लेख समाज के हित के लिए लाभकारी सिद्ध होगें।

मैं स्मारिका के प्रकाशन के लिए जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट परिवार को बधाई एंव शुभकामनाएं प्रदान करता हूं और साथ ही साथ ट्रस्ट के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

(सत्यदेव नारायण आर्य)

KALRAJ MISHRA
MEMBER OF PARLIAMENT
(LOK SABHA)
CHAIRPERSON
- Standing Committee on Defence
- Joint Committee on Offices of Profit

Former Union Minister, Govt. of India
Office:
136A, Parliament House Annexe
New Delhi-110 001
Phone : 011-23034136
Telefax : 011-23015306

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि फरीदाबाद में जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी '**सुदर्शनालोक-2020**' का प्रकाशन करने जा रहा है। जिसमें संस्था की गतिविधियों सहित समाज उपयोगी लेखों का भी संग्रह होता है। श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के नेतृत्व में आश्रम द्वारा चलाई जा रही विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के बारे में जानकर मैं अभिभूत हुँ और इनके निरंतर प्रगति की कामना करता हुँ।

मुझे यह जानकर भी प्रसन्नता हुई कि आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जाता है। वहीं संस्कृत और संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए एक महाविद्यालय भी चलाया जा रहा है जिसमें बच्चों को शास्त्री तक निःशुल्क आवासीय शिक्षा दी जा रही है। आश्रम द्वारा चलने वाली पर्यावरण, समाज कल्याण की अन्य गतिविधियां पौधारोपण, वस्त्र वितरण, स्वास्थ्य सुविधाएं आदि भी निसंदेश प्रशंसा के पात्र है।

मैं आपकी संस्था की - उत्तरोत्तर प्रगति और सुंदर एवं जन उपयोगी वार्षिकी '**सुदर्शनालोक-2020**' के सफल प्रकाशन की शुभकानाएं प्रेषित करता हूँ।

(कलराज मिश्र)

Residence: 3, Safdarjung Road, New Delhi-110 011 • Phone: 011-23792670, 23792680

मनोहर लाल
MANOHAR LAL

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।
CHIEF MINISTER, HARYANA,
CHANDIGARH.

Dated 07-01-2019

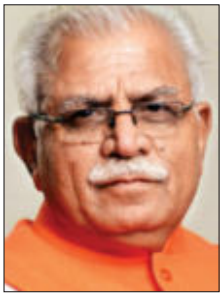

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि वर्षों से समाज सेवा और धर्मार्थ कार्यों में रत जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद अपनी वार्षिक पत्रिका के नये अंक **'सुदर्शनालोक-स्मारिका वर्ष 2020'** का प्रकाशन कर रहा है।

इतिहास इस बात का गवाह है कि हमारे देश और समाज के विकास एवं उत्थान में आध्यात्मिक संत-मुनियों का विशेष योगदान रहा है। इन दिव्यात्माओं द्वारा स्थापित किए गए जीवन के उच्चादर्शों ने मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। ऐसे में जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम अपने संस्थापक स्वामी सुदर्शनाचार्य के सिद्धांतों और आदर्शों का अनुसरण करते हुए लोगों, विशेषकर युवा पीढ़ी को अपनी धार्मिक परम्पराओं, लोक मान्यताओं और संस्कृति से जोड़ने का जो कार्य कर रहा है वह अत्यन्त सराहनीय है।

आशा है कि स्मारिका में प्रकाशित विभिन्न शिक्षाविदों तथा धर्म-गुरुओं के लेखों एवं विचारों से लोग, विशेषकर युवा अपनी संस्कृति को और बेहतर ढ़ग से समझ सकेंगे तथा साथ ही उनमें आपसी भाईचारे एवं सौहार्द की भावना सुदृढ़ होगी।

मैं **'सुदर्शनालोक-स्मारिका वर्ष 2020'** के सफल प्रकाशन की मंगलकामना करता हूँ।

मनोहर लाल

(मनोहर लाल)

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान
मुम./सन्देश/ओएसडीएफ/2019
जयपुर, 15 दिसम्बर, 2019

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद की ओर से **'सुदर्शनालोक-स्मारिका - 2020'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

सामाजिक समरसता, सद्भाव, भाईचारा तथा आपसी प्रेम हमारी महान विरासत हैं। ऐसे समय में जबकि परस्पर अविश्वास बढ़ रहा है, इन मूल्यों को आत्मसात करने की बड़ी आवश्यकता है। धर्म गुरू, सामाजिक संगठन तथा साहित्यकार इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

आशा है इस स्मारिका में प्रकाशित होने वाले विचार एवं लेख आध्यात्मिकता के साथ-साथ परोपकार तथा सामाजिक समरसता की भावना को विकसित करने में सहायक होंगे।

मैं इस प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

अशोक गहलोत

कृष्ण पाल गुर्जर
KRISHAN PAL GURJAR

सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

शुभकामना संदेश

जानकर अति प्रसन्नता हुई कि फरीदाबाद में जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम हर वर्ष क भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी सुदर्शनालोक 2020 का प्रकाशन करने जा रहा है जिसमें संस्था की गतिविधियों सहित समाज उपयोगी लेखों का भी संग्रह होता है। इनके निरंतर प्रगति की कामना करता हूँ। आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जाता है वहीं संस्कृत और संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए एक महाविद्यालय भी चलाया जा रहा है जिसमें बच्चों को शास्त्री तक निःशुल्क आवासीय शिक्षा भी दी जाती है।

मैं आपकी संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति और सुंदर एवं जन उपयोगी वार्षिकी **सुदर्शनालोक -2020** के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद।

(कृष्णपाल गुर्जर)

Office : 301, 'A' Wing, Shastri Bhawan, Dr Rajender Prasad Road, New Delhi-110001, Tel. : 011-23072192, 23072193, Fax : 011-23072194

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा,
एम.एल.ए.
नेता प्रतिपक्ष,
नेता कांग्रेस विधायक दल,
हरियाणा विधान सभा
एवं पूर्व मुख्य मन्त्री, हरियाणा

BHUPINDER SINGH HOODA,
M.L.A.
Leader of Opposition,
Leader of Congress Legislature Party,
Haryana Vidhan Sabha
and Former Chief Minister, Haryana.

D.O. No. Secy/EX-CMH-2019/616

Kothi No. : 70, Sector-7,
Chandigarh.
Ph. : 0172-2794473

Dated 13.12.2019

MESSAGE

It gives me immense pleasure to know that Janhit Sewa CharitableTrust (Regd.), Faridabad is bringing out the next annual issue of **"SUDARSHANALOK — Smarika Varsh 2020".**

It is praiseworthy that **SUDARSHANALOK —** Smarika is aimed to provide socio-economic & religious literature in the larger interest of the mankind and to ensure harmony in the world. The publication will consist of views & articles from renowned academicians, philanthropist, social workers and religious Gurus.

I take this opportunity to express my best wishes to the Janhit Sewa Charitable Trust (Regd.), Faridabad and laud the efforts taken in bringing out the next annual issue of **"SUDARSHANALOK — Smarika Varsh - 2020"** successfully. I hope the publication will prove very useful to the Society.

(Bhupinder Singh Hooda)

Delhi : # 191, North Avenue, New Delhi - 11001, Ph.: +91-11-23093805.
Rohtak : Model Town, Delhi Road, Rohtak (Haryana) - 124001, Ph.: +91-1262-282283.
Chandigarh : Kothi No. 70, Sector-7, Chanidgarh - Ph.: 0172-2794473

सत्यमेव जयते

वसुन्धरा राजे

13, सिविल लाइन्स
जयपुर (राज.)

सन्देश

संदेश

बडे ही हर्ष का विषय है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा वार्षिक संस्करण **'सुदर्शनालोक - स्मारिका वर्ष 2020'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस स्मारिका का उद्देश्य मानव जाति को सामाजिक, शैक्षणिक तथा धार्मिक साहित्य उपलब्ध कराने के साथ सम्पूर्ण विश्व में सद्भाव सुनिश्चित करना है।

मुझे यह भी बताया गया हैं कि इस स्मारिका में प्रसिद्द शिक्षाविद, जनहितैषी, सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा धर्म गुरूओं के विचार और लेख भी प्रकाशित किए जाएंगे।

स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

वसुन्धरा राजे

(वसुंधरा राजे)

OSCAR FERNANDES, MP

Resi. : 8 Pt. Pant Marg
New Delhi-110 001
Tel. No. : 23359177
23359178
(O) : 23015947

Message

I want to wish my heartiest best wishes for the **SudarshanaLok Smarika Varsh-2020** published by Janhit Sewa Charitable Trust. This Smarika aims to improve social values and establish peace and harmony in the world.

My all good wishes are with the Ashram & Smarika publications.

(Oscar Fernandes)

oscar@sansad.nic.in, oscaraicc@gmail.com

DR. KARAN SINGH

3, NYAYA MARG,
CHANAKYAPURI
NEW DELHI - 110 021

Message

Sudarshanalok is an annual Publication brought out by the Janhit Sewa Charitable Trust which is doing commandable work in the field of social welfare. I send the organization and the readers my warm greetings for the year 2020.

Let us hope that we can overcome the various challanges that the nation is facing. It is particularly important that the inter-faith and inter caste harmony be maintained at all cost.

(Karan Singh)
Dec, 20, 2019

TEL. (011) 2611-5291 2611-1744, FAX (91-11) 2687-3171 2462-7102
Email karansingh@karansingh.com

Sri:
Srimate Ramanujaya Nama:

Mahāmahōpādhyāya, Śāstravidyānidhi, Pandita-raja
M.A. Lakshmithathacharya
Recipient of Award of President of India
President, Samskriti Foundation, Mysore
Presiding Acharya, Anantarya Peetham,
Melkote, Mandya District, Karnataka

Shubkamna Sandesh

Salutations to Śrī Śrī Purushottamacharyaji Maharaj, Head Sidhdata Ashram, Faridabad, Haryana!

I am very happy to offer the "Shubkamna Sandesh" for **Sudarshanalok – 2020.**

Sri Sidhdata Ashram, founded by HH Sri Sri Sudarshanacharyaji Maharaj is one of the premier most organizations spreading the tenets of Srivaishnavism in this world for the benefit of entire humankind. Presently, it is headed by Śrī Śrī Purushottamacharyaji Maharaj who is a personification of righteousness, knowledge, renunciation and also several other such most desirable qualities that are seldom found in any person in any sphere of life today. He truly is an epitome of all that one can aspire for in life and just like the Bhagavan Rāmānujācārya, is engaged in ensuring the all-round development simultaneously of both individuals and society–to put it in a nutshell.

I pray to Lord Śrīmannārāyana and Bhagavān Rāmānujācārya that Śrī Śrī Purushottamacharyaji Maharaj should in future also facilitate all persons of this world to become the recipients of the divine grace and blessings of the Supreme Lord and enable even one and all to achieve fulfillment here and hereafter.

Prof. M.A.Lakshmithathachar

राष्ट्रपति-सम्मानित
देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी
एवं निदेशक, संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार)
अध्यक्ष, आधुनिक संस्कृत पीठ, ज.रा. राजस्थान, संस्कृत विश्वविद्यालय
प्रधान सम्पादक "भारती" संस्कृत मासिक
सदस्य, संस्कृत आयोग, भारत सरकार

मो: +91-8764044066
फोन: (0141)2376008
अध्यक्ष, मंजुनाथ स्मृति संस्थान
सी-8, पृथ्वीराज रोड
जयपुर-302001

शुभाशंसा

देश की राजधानी के निकट स्थित श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम और जनहित सेवा चैरीटेबल ट्रस्ट ने देश की सेवा में जो विविध प्रकार के कार्य गत दशकों में किये हैं वे आज पूरे समाज की प्रशंसा के पात्र हो गए हैं यह जानकर किसे प्रसन्नता नहीं होगी। श्री सिद्धदाता आश्रम के परिसर में गौशाला जिस प्रकार गौ सेवा का कार्य कर रही है उसी प्रकार वेद-वेदांग संस्कृत महाविद्यालय धर्म की ओर समाज की उल्लेखनीय सेवा कर रहा है। ऐसी अनेक गतिविधियां परम प्रशंसा की पात्र हैं।

सुदर्शनालोक स्मारिका अनेक वर्षों से संस्थान की गतिविधियों की जानकारी भी देती रही है तथा अनेक विषयों की सुरुचिर, संग्रहणीय सामग्री भी उत्कृष्ट साज-सज्जा के साथ इसमें प्रकाशित होती रही है। इस वर्ष भी सुदर्शनालोक अपने उत्कृष्ट आलोक से पाठको के मानस को उलास देने आ रही है यह जानकारी पाकर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ। ब्रह्मलीन स्वामी सुदर्शनाचार्य जी की स्मृतियों को श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुये तथा स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी के सत्संकल्प का अभिनन्दन करते हुए मैं **सुदर्शनालोक-2020** के प्रकाशन के उपलक्ष्य में हार्दिक शुभाशंसन प्रेषित करता हूँ।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(देवर्षि कलानाथ शास्त्री)

'नाम जाप'

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक- श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम), फरीदाबाद, हरियाणा

जो व्यक्ति अन्य व्यक्ति को भगवान की भक्ति में लगने के लिये प्रेरित करता है वह बडे भारी पुण्य का भागी होता है। भक्ति का पद ज्ञान से भी बढ़कर बताया गया है। ज्ञान, अज्ञान का नाश करता है जबकि भक्ति प्रेम की मात्रा में क्षण-प्रतिक्षण बढोत्तरी करती है। हृदय प्रेम से भर देती है। इस प्रेम में विशेष आकर्षण है, तो विरह भी है। यह सविशेष है।

यह भक्त और भगवान को निकटता, और निकटता, और अन्त में अभिन्नता प्रदान करती है। इससे भगवान अपने भक्त के वश में हो जाते हैं यानि प्रेम के वशीभूत होकर, अपने शरणागत की कुशलक्षेम का ध्यान वह स्वयं ही रखते हैं। कभी भी बुरा नहीं होने देते।

भगवान को ही स्मरण करता हुआ व्यक्ति इस मृत्युलोक पर अच्छे कर्मों को करता हुआ परमलोक को प्राप्त होता है, मोक्ष की प्राप्ति करता है। महाभारत में कहा गया, गीता में कहा गया कि भगवान के नाम का जाप करने वाला मोक्ष को प्राप्त होता है और वह बार-बार अनेकानेक गर्भों की यात्रा से बचकर श्रेष्ठ जीवन- उस प्रभु के सान्निध्य में जीता है।

एक बार मन से शरणागत हो जायें। बाकी का कुशलक्षेम पूछना, करना उन परम दयालू भगवान की जिम्मेदारी हो जाती है। ऐसे शरणागत को भगवान ने गीता के 8वें अध्याय के 64वें श्लोक में **'सर्वगुह्यतम वचन'** कहा है।

ऐसी शरणागति जैसी मीरा ने ली-

"मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई"।

केवल इतने भर से वह भगवान की और भगवान उसके हो गये। केवल नाम लेने से। लेकिन उस नाम लेने में है भाव, भाव जो आम इंसान को मीरा बना दे। ऐसा भाव रखो कि सबकी सेवा तो करूंगा, आशा नहीं रखूंगा। सेवा के बदले सेवा की अथवा अन्य किसी वस्तु की आशा की तो सब व्यर्थ है। भगवान के नाम पर सेवा करना ही सर्वोत्तम है। ध्यान रखें कि जीवन जीने के लिये किये कर्मो की बात नहीं हो रही है। यह है अध्यात्म की बात। अध्यात्म जिसमें एक गुरु हैं, एक भगवान हैं, सत्संग है और मानवता। पूरी मानव जाति इसी के आस-पास घूमती है।

> **"भगवान के नाम पर सेवा करना ही सर्वोत्तम है। ध्यान रखें कि जीवन जीने के लिये किये कर्मो की बात नहीं हो रही है। यह हे अध्यात्म की बात। अध्यात्म जिसमें एक गुरु हैं, एक भगवान हैं, सत्संग है और मानवता। पूरी मानव जाति इसी के आस-पास घूमती है। इसकी रचना ही इस प्रकार से की गई हे। जैसे बेर के पेड़ पर बेर ही आएंगे, आम नहीं आते; उसी प्रकार मानव का गहना मानवता ही है, अन्य कुछ नहीं।"**

इसकी रचना ही इस प्रकार से की गई है। जैसे बेर के पेड़ पर बेर ही आएंगे, आम नहीं आते; उसी प्रकार मानव का गहना मानवता ही है, अन्य कुछ नहीं। मानवता उसी में होगी, जो गुरु का अनुसरण करेगा, गुरु का संग करेगा, सत्संग करेगा। श्री भगवान् ने गुरु की महिमा को बताते हुए कहा है-

'स महात्मा सुदुर्लभः'(गीता 7/9)

और अपने लिए कह रहे हैं-

'तस्याहं सुलभः' (गीता 8/14)

गुरुजनों को दुर्लभ और स्वयं को सुलभ कह रहे हैं। लेकिन कब होंगे सुलभ, जब उनकी शरणागति लेंगे और शरणागति देने वाले हैं गुरुजन। गुरु ही बताते हैं संसार और भगवान का अन्तर, वही बताते हैं शरीर और आत्मा का अन्तर। संसार और शरीर एक ही हैं और आत्मा और भगवान एक हैं। यह स्पष्ट जान लेना चाहिए कि जो हम हैं वह आत्मा हैं, परमात्मा की सन्तान, उनके ही अंश। शरीर नहीं हैं। शरीर तो पांच सांसारिक पंचों का रूप है। शरीर को मानस में भी अधम कहा गया है। इसका कोई मोल नहीं बताया। मोल बताया है विवेक का। इस शरीर का उपयोग ही तब है, जब इसमें विवेक का वास हो। इस शरीर के साधन से नरक-स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

सदुपयोग और दुरूपयोग का भेद बताने वाले भी गुरुजन ही हैं। यह भेद जानने वाले जान जाते हैं कि- क्या कर्त्तव्य है और क्या अकर्त्तव्य। क्या सार है और क्या असार है, क्या नित्य है और क्या अनित्य है, क्या ग्रहण करना है और क्या त्यागना है। ऐसा भेद जानने वाला व्यक्ति वास्तव में मानव सेवा, और भगवान का नाम लेता हुआ मोक्ष पाता है। ध्यान रहे कि आत्मा ही यह भेद-विभेद जानती है, शरीर नहीं। क्योंकि इस शरीर में तो कुछ भी शुद्धता नहीं है। यह तो मल-मूत्र की फैक्ट्री है। इसको रोका नहीं जा सकता है। ऐसे शरीर की महिमा नहीं गाई गई है, सुंदर क्यों कहा गया? इसलिये सुंदर कहा गया क्योंकि इसका बेहतर सदुपयोग किया जा सकता है। अन्य शरीरों के द्वारा उतना बहतर कार्य नहीं कर सकते, जितना मनुष्य शरीर के द्वारा कर सकते हैं। इसकी बनावट अन्य शरीरों से सुगम है, इसलिये कहा गया है सुंदर। नहीं तो सभी शरीर मल-मूत्र की ही फैक्ट्री है।

इसी शरीर के लिए विशेष रूप से भगवान ने कहा-

'सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर' (गीता 8/7)।

निरंतर मेरा नाम जपें। क्यों? क्योंकि हर जीव भगवान का ही अंश है और मानव शरीर उसकी अहेतुकी कृपा का प्रसाद है।

लेकिन यह शरीर कुछ समय के लिए ही मिला है। इसका सही उपयोग करो तो मोक्ष, दुरूपयोग करो तो अनेक योनियों का नरक।

बार-बार बर मागउँ हरिष देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥

जिनके लिए कुछ भी असंभव नहीं वह भगवान शंकर भी भक्ति और सत्संग मांग रहे हैं क्योंकि सच्चा कर्म ही यह है। भगवान् की भक्ति कहीं भी और कभी भी हो सकती है, क्योंकि-

'सर्वतः पाणिपादम्'
(गीता 13/13)।

भगवान् के चरण कमल हर जगह हैं; जहां भी भजो, वहीं भगवान् प्रकट हो जाते हैं।

मानव शरीर की सफलता इसी में है कि वह परमात्मा के नाम का गुणगान करें, सत्य राह पर चले और मानवता को जीवन में धारण करें और यह सब भक्ति करने से सहज ही मिल जायेगा। भक्ति का अर्थ व्यापक है। लेकिन इसको सरलता से यूं भी समझा जा सकता है:

भ का अर्थ हे- भरण।
क का अर्थ हे- कर्म।
त का अर्थ है- तारणा।
ई का अर्थ हे- ईश।

भक्ति ही हमारा भरण-पोषण करने वाली है। भक्ति ही सद्कर्म की राह दिखाने वाली है। भक्ति ही तारणहारी या मुक्तिकारी है और भक्ति ईश्वर प्राप्ति का एक साधन भी है। भक्ति से ही हम भगवान को जान सकते हैं, देख सकते

हैं और प्राप्त भी कर सकते हैं। भगवान को पाना हमारा लक्ष्य है क्योंकि वही सत्य हैं। सत्य की खोज करना भी तो मानव का ही स्वभाव है।

भगवान का अस्तित्व हमेशा-हमेशा के लिये है। प्रत्येक वस्तु का नाश होना निश्चित है लेकिन भगवान अविनाशी हैं। वह परम मंगलकारी, कल्याणकारी, सृजनहारी हमारे परमपिता हैं। वह प्रत्येक जीव के पिता हैं। प्रत्येक जीव को मुक्ति प्रदान करने वाले हैं। वह (नारायण) अतुलनीय और किसी भी सीमा से परे हैं क्योंकि सभी का निर्माण उनके द्वारा ही हुआ है। वह सब मायाओं से परे महामायावी हैं। सब माया उनके समक्ष गौण हैं। वह परम प्रकाशक सबके जीवन प्रदाता हैं। सूर्य, चन्द्र, असंख्य तारे और आकाश गंगाएं जिनके प्रकाश से प्रकाशमान हैं, जिनकी शक्ति से गतिमान हैं, जिनकी श्वास से समस्त चराचर जगत प्राणवायु पाता है। उनको पाना बहुत कठिन होता होगा, कुछ लोग ऐसा मान सकते हैं। लेकिन एक भक्त के लिये वह सर्वसुलभ हैं।

वह परमात्मा सभी, ज्ञान और माया के भी ऊपर हैं क्योंकि माया का तात्पर्य है कि जो नहीं हो, परंतु परिभाषित हो। जिसको केवल कल्पित अथवा परिभाषित किया जा सकता है, वास्तव में वह हो ना। जैसे अविद्या, अज्ञान, मोह, अंधकार। यह सब नहीं होते हैं लेकिन चूंकि परिभाषित हैं इसलिये इनसे मानव डरा हुआ है। कल्पना लोक में जी रहा है। जो नहीं है, उससे डर रहा है और जो है उसको भूल रहा है, परमात्मा को भूल रहा है। परमात्मा का प्रकाश है, लेकिन माया के अंधकार से डर रहा है। ज्ञान है, लेकिन अज्ञान से मोह कर रहा है। विद्या है, लेकिन उसको छोड़कर अविद्या (जोकि है ही नहीं) को पकडे बैठा है।

अविद्या, अज्ञान और माया का त्रिकोण मिलकर मानव को डरा रहा है और मानव इन सबसे घबराया इधर-उधर भटक रहा है। गलत रास्ते पर भटक रहा है। जो सही रास्ता है, उसपर नहीं आ रहा, भक्ति के रास्ते पर नहीं आ रहा। इसी कारण से वह परमात्मा से दूर है और दुख तकलीफों के घेरे में स्वयं को फंसा पाता है। वह भूलवश माया को सब कुछ मान बैठा है, मोह- माया में फंसा हुआ है। परमात्मा से विमुख हुआ बैठा भूल गया कि वह भी परमात्मा का ही अंश है।

इतना सुंदर मनोहारी, परमप्रिय, सुखदाता ईश्वर का अंश होने का सौभाग्य मानव को प्राप्त हुआ और भगवान को ही भूल गया। नारायण को भूल गया। अपने मूल को भूल गया। सृष्टि के आदि और अनंत को भूल गया। कितनी बड़ी भूल कर बैठा। वह ईश्वर मानव को अपना पुत्र बनाये हुए गले से लगाने को आतुर है पर मानव को देखो अन्य-अन्य कारणों में फंसकर उस सृष्टि रचयिता को भूल बैठा।

जो भूल सुधार ले वो सज्जन।
सुबह का भूला शाम को वापिस लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते।
भूल सुधार का सर्व साधारण तरीका है भक्ति।

केवल और केवल भक्ति से ही भगवान को पाया जा सकता है। मैं ऐसा नहीं कहता कि अन्य रास्ते गलत हैं लेकिन उनसे केवल उसे (नारायण) देखा जा सकता है। पाया नहीं जा सकता। भक्ति का महत्व कलियुग में वैसे भी सर्वोपरि बताया गया है। भक्त अपनी भक्ति से परमात्मा को प्राप्त करता है। उसके सुंदर, कल्याणकारी, मनोहारी, नयनाभिराम छवि को अपने अंदर बसाता है। भगवान के स्वरूप का पूर्ण वर्णन करना असंभव है। गुरु कृपा से भक्ति मार्ग पर आगे और आगे बढ़ने वाला भक्त भगवान के और निकट और निकट पहुंचता है और अंत में जिस प्रकार आंखें बोलने का काम नहीं कर सकती, वाणी देखने का काम नहीं कर सकती, उसी प्रकार आत्मा केवल परमात्मा के सुंदर स्वरूप के सान्निध्य को ही प्राप्त करती है उसे कोई दूसरा काम आता ही नहीं है। सो, वह हाथ तो है नहीं कि लिख सके, वाणी तो है नहीं कि कह सके। यह तो केवल आनंद अनुभूति की बात है। महसूस करने की बात है इसीलिये कहा गया है कि वह अकथनीय, अवर्णनीय है। सबको रचने वाले की रचना कौन करे। यह तो वही कराये, तभी संभव है।

भगवान को कई नामों से पुकारा जाता है जिनसे साधारण जनों के मन में कभी-कभी शंकाओं का निरूपण हो जाता है। वह अपने-अपने ईष्ट देव के साथ स्वयं को इस प्रकार बांट लेते हैं जैसे सम्पत्ति का बंटवारा किया जाता है। एक-दूसरे के आराधक देवताओं अथवा देवियों से एक दूरी बनाकर वह समाज में रहने लगते हैं। इस भ्रम में कि मेरी ईष्ट देवी तो कालिका है, उसके ईष्ट देव हनुमान जी हैं या कृष्ण हैं आदि आदि। और किस ईष्ट की सेवा करूं जिससे अमुक फल की प्राप्ति हो। ऐसी भ्रांतियां व धारणाओं का निर्माण लोग कर लेते हैं।

कहा जाता है कि ऐसा ही भेद गुरू नानक देव जी को हो गया कि कौन से भगवान का स्मरण करूं। गुरु जान गये, बोले, नानक क्यों चिंता करता है-

राम रामा राम रामा राम रामा उर धारिये।
गोविन्द केशव मदन गोपाल एक खण न बिसारिये॥

गुरु ने कहा- हे नानक तू राम का नाम ले, गोविन्द का नाम ले। लेकिन ले जरूर। किसी का भी नाम ले। एक क्षण भी बर्बाद किये बिना तू भगवान का नाम लेता चल। क्योंकि भगवान एक ही हैं। हम केवल उसको विभिन्न रूपों में देखते और पुकारते हैं। वह भी हमारी भावना को देखकर उसी रूप में हमारा कल्याण करता है। जिस प्रकार भगवान ने चराचर प्राणियों की रचना की, उनका विकास किया; उसी प्रकार अपने भी कई रूप स्थापित किये। लेकिन सत्य यही है कि जिस प्रकार नदियां अन्त में समुद्र में मिलकर एक विराट रूप ले लेती हैं; उसी प्रकार भगवान विभिन्न रूपों में दर्शन देकर हमें कृतार्थ कर रहे हैं, लेकिन हैं वह एक ही। परमशक्ति। परमात्मा।

वह नारायण कर्ता और भोक्ता स्वयं ही है। कुछ भी उनसे बाहर नहीं है। उनके स्मरण मात्र से हमारे क्लेश, दुःख आदि समाप्त होकर जीवन सुख शांति से परिपूर्ण हो जाता है।

भगवान चाहते भी यही हैं कि उसके भक्त सदा सर्वदा सुखी रहें, शांत रहें, उनके सभी मनोरथ पूर्ण हों। उनका कल्याण हो। वह ऐसा इसलिये चाहता है क्योंकि वह परमपिता है, हर जीव का पिता है, हर आत्मा का पिता है। इसीलिये परमपिता है। उससे जो जो मांगोगे वो-वो मिलेगा। किसी भी रूप में मांगो, किसी भी भाषा में मांगो, पर मांगो हृदय से। वह केवल प्रेम का भूखा है, विचार का भूखा है। उसे धन दौलत से नहीं रिझाया जा सकता वह बात अलग है कि जिसके पास जो है वह उसका समर्पण तो करेगा ही। लेकिन मुख्य बात है आस्था की, निष्ठा की, शरणागति की। उसकी शरणागति जरूरी है।

शरणागति का उदाहरण देखिये अपने देश को आजाद कराने के लिये क्रान्तिकारियों के दलों ने जब अंग्रेज शासकों को मारना शुरू किया तो आमने-सामने का युद्ध ही छिड़ गया। कभी किसी का पक्ष भारी तो कभी किसी का। कई मौके आये, अंग्रेज जनता अथवा अधिकारियों के पत्नी, बच्चे जान बचाने के लिये भारतीयों के घरों में घुस आते थे और भारतीय उनको अपने घर में छुपा कर रक्षा भी करते थे। देखिये शरणागति का असर कि दुश्मन की भी रक्षा की जा रही है। क्योंकि वह तो आपकी शरण में आ गया।

भगवान ने कहा-

'मामेकं शरणं व्रज।' 'तू मेरी शरण आ' में तेरा सर्वकल्याण करूंगा तेरी सभी किन्तु परन्तु का निस्तारण मैं करूंगा। तू कोई उपायों को ना कर। मेरी शरण आ। ऐसा कहा श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन से और कहा-

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।

''तू चिन्ता मत कर, मैं तुझे सभी पापों से मुक्त कर दूंगा।'' लेकिन कब करेंगे? जब भगवान की शरण जायेंगे और भगवान की शरण जाना क्या है? अपनी लज्जा, मान, अभिमान, बड़े-छोटे का भेद त्यागकर, सभी इन्द्रियों की आसक्ति त्यागकर, संसार की मोह माया से शून्य होकर जब मानव केवल और केवल भगवान की शरण में आकर उसी के आश्रय को सर्वस्व जानकर हृदय से भक्ति कर भगवान को रिझाता है, उसका स्मरण करते हुए जीवन यापन करता है, अपने सभी कर्त्तव्यों को भगवान के लिए मानकर करता है; उसे शरणागति कहा गया है।

शरणागति का मतलब यह भी बिल्कुल नहीं है कि सब काम धन्धों को त्यागकर भगवान का भजन-कीर्त्तन ही करते रहो। भगवान ने स्वयं ही कहा है-

'नियतं करु कर्म त्वं।

जो भी शास्त्र सम्मत कर्म है यानि जो भी श्रेष्ठ जन के कर्म होते हैं, तू कर। उसमें कुछ भी गलत नहीं है। भगवान कह रहे हैं, कर्म अवश्य ही कर।

साथ ही यह लक्ष्य भी बना ले कि भजन करना है। भगवान का नाम लेते हुए इस लोक का जीवन पूरा करना है। उसकी रचना को और अधिक सुंदर बनाना है। उसकी सच्ची संतान बनना है।

अक्सर लोग गुरुजन के सम्मुख लक्ष्य तो बना लेते हैं, लेकिन शीघ्र ही उसे तोड़ बेठते हैं। इससे होता यह है कि जिस सेतु यानि पुल का निर्माण मानव और भगवान के बीच शुरू हुआ। वह निर्माण रूक जाता है। यह लक्ष्य का बार-बार टूटना यानि पुल के निर्माण कार्य में बाधाएं आना, उसकी कमजोरी का कारण बनता है। यह लक्ष्य नहीं कहलाता बल्कि कुलक्ष्य हो जाता है। साधारण सी बात है जब कोई ठेकेदार समयानुसार निर्माण कार्य नहीं कर रहा होता है अथवा कोई मिलावट कर रहा होता है तो उसका ठेका समाप्त कर दिया जाता है; बेशक परमात्मा परम दयालू हैं, वह अपने प्रत्येक भक्त की भलाई के लिए सदैव लालायित रहते हैं। लेकिन यह भी ठीक नहीं कि हम बार-बार अपने लक्ष्य से भटकते रहें, उससे बार-बार झूठ बोलते रहें। यदि हम अपने लक्ष्य पर अडिग नहीं रह सकते तो यह मानव जीवन तो बेकार ही गया। हम अपने लक्ष्य पर नहीं रहें, उस परमपिता द्वारा दिये जीवन का केवल भोग ही करें, उसका नाम ना लें तो हमारी मुक्ति नहीं हो सकती।

'सेवा का सुफल'

अनन्त श्रीविभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर
श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
पीठाधीश्वर- श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम), फरीदाबाद, हरियाणा

माता-पिता, आचार्य की सेवा का फल परम बताया गया है। इनकी सेवा करने से यज्ञों व तीर्थों के फल प्राप्त होते हैं। इनकी कृपा का मोल नहीं चुकाया जा सकता अथवा यूं कह लें कि ऋण से मुक्ति ही नहीं है। इनकी कृपा साक्षात् अमृत है। जिस प्रकार से मन्दिर में भगवान की पूजा करते हो, उसी प्रकार माता-पिता और आचार्य को भी मानना चाहिए क्योंकि वो यज्ञादि, तीर्थादि का अर्जित पुण्य आपको सहज ही दे देते हैं। वह अपनी संतान से, शिष्य से प्रसन्न होकर कब क्या दे दें कोई सटीक भविष्यवाणी नहीं कर सकता।

किसी की भी सेवा करने का फल अवश्य ही मिलता है। सेवा करना कभी भी व्यर्थ नहीं जाता। भगवान स्वयं भी सेवा करने में सदैव ही आनन्दित होते हैं। सेवा करने से जो अभीष्ट फल की प्राप्ति है, वह किन्हीं यज्ञादि से बढ़कर है।

मानव नित्यप्रति कार्यों को निबटाने में अनेकानेक व्यक्तियों से मिलता है। हर कार्य को करने के लिए सदैव ही अन्य व्यक्तियों का सहयोग लेना पड़ता है और अन्य व्यक्तियों को सहयोग देना भी पड़ता है। यह सहयोग का लेना और देना भी सेवा का एक रूप ही है।

संसार के सभी दुखी जनों को नारायण मान उनकी सेवा का कार्य करने वाले मानव के मन के सभी संताप तत्क्षण ही समाप्त हो जाते हैं। नर को नारायण मानने भर से नारायण में विश्वास उत्पन्न हो जाता है। और भोग से निवृति स्वयं ही प्रारंभ हो जाती है। मैं तेरा, मेरा सब कुछ तेरा कहने वाले के लिए भगवान भी कहते हैं- 'और मैं तेरा'। भगवान जिसके हो गए, उसका कोई क्या बिगाड़ेगा?

संसार की वृत्तियों में फंसा हुआ मानव वास्तव में कुछ नहीं कर सकता। यह ठीक वैसे ही है कि किसी के हाथ पैर बांधकर डाल दो और कहो कि अब हल चलाकर दिखा। महाराज वह हल अवश्य ही चलाकर दिखा देगा, पहले उसके हाथ तो खुलने चाहिए। वह हल अवश्य ही चलाएगा और धरती से अन्न धन भी अवश्य ही उगायेगा, लेकिन पहले उसके बंधन खुलने चाहिए।

"संसार के सभी दुखी जनों को नारायण मान उनकी सेवा का कार्य करने वाले मानव के मन के सभी संताप तत्क्षण ही समाप्त हो जाते हैं। नर को नारायण मानने भर से नारायण में विश्वास उत्पन्न हो जाता है। और भोग से निवृति स्वयं ही प्रारंभ हो जाती है। मैं तेरा, मेश सब कछ तेरा कहने वाले के लिए भगवान भी कहते हैं- 'और मैं तेरा'। भगवान जिसके हो गए, उसका कोई क्या बिगाड़ेगा?"

अब प्रश्न यह है कि वह बंधन खोलेगा कौन?

बंधन खोलने के कई उपाय हैं, उनमें से कोई भी एक उपाय अपनाकर बंधनों से मुक्त हुआ जा सकता है। अध्यात्म में भजन, सत्संग, कीर्तन, सेवा आदि अनेक प्रकल्प हैं जिनके द्वारा भव से पार जाया जा सकता है और परमपिता के श्री चरणों में स्थान सुरक्षित किया जा सकता है।

यदि हम भगवान के भजन आदि के साथ-साथ सेवा को भी अपने जीवन में स्थान दें तो में यह बात गारंटी से कह सकता हूं कि कितना ही प्रतिकूल मौसम क्यों न हो, वह आपको सेवा से नहीं डिगा सकता। वह सेवा धर्मी व्यक्ति ही क्या जिसे मौसम की मार डिगा दे। मौसम स्थायी नहीं है, उसका फल भी स्थायी नहीं है। जबकि सेवा एक स्थायी व महत्वपूर्ण कर्म है, उसका फल भी पूर्व नियोजित व स्थायी है।

संयम, सदाचार और परिश्रम का ही युग्म स्वरूप है सेवा। सेवा के लिए फिर भी कोई एक निश्चित परिभाषा तय नहीं है। एक बात गांठ बांध लें कि अपने से बड़ों का आदर करना है, भूलवश भी उनका अनादर न होने पाये। बड़े केवल आदर मात्र से हम पर निहाल हो जाते हैं। जिन लोगों के परिवार में बड़ों के लिए सम्मान व छोटों के लिए प्यार की गंगा बहती है, उनकी त्रिवेणी

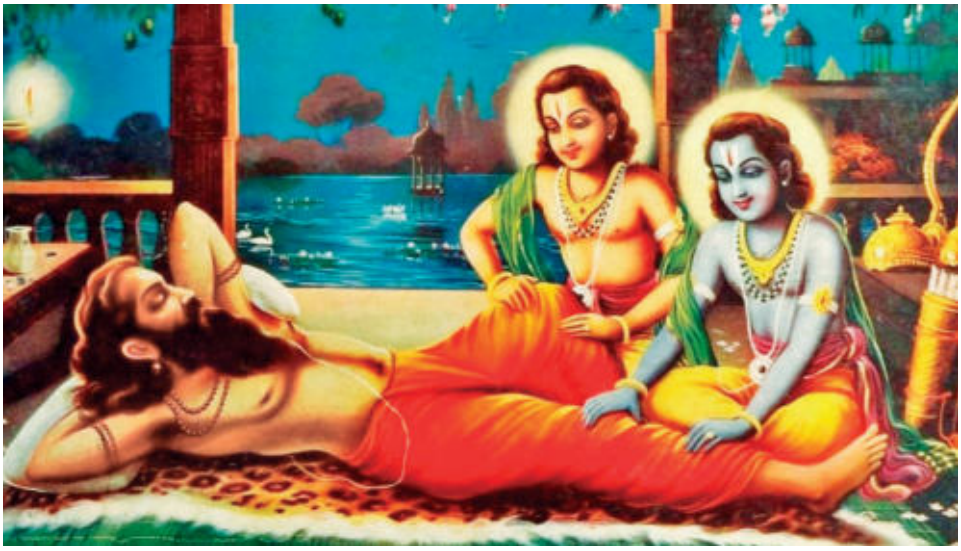

कभी भंवरे को मंडाराते देखा है?

यह जीवन चर्चा आपके जीवन में शांति और ठहराव लाएगी। आप जो चाहेंगे वह आपको प्राप्त होगा। भगवान स्वयं सदाचारी मनुष्य की सहायता करने के लिए तैयार रहते हैं। आप शांत होंगे तो आप में अहंकार वास नहीं कर पायेगा। अहंकार सदाचार का दुश्मन होता है। जहां सदाचार रहेगा वहां अहंकार का वास हो ही नहीं सकता। सदाचार से आप विनम्र हो जाते हैं। विनम्र व्यक्ति किसी से छुपा नहीं रहता बल्कि वह हर किसी को प्रिय होता है। विनम्रता से आप किसी से भी काम ले सकते हैं। मुझे बताइये कि आप लड़ झगड़कर किसी पड़ोसी से काम करवा सकते हो क्या? बिल्कुल नहीं। उल्टा वह यह देखेगा कि आपका काम कैसे रुके। लड़ना-झगड़ना किसी भी समस्या का हल नहीं है, उल्टा इससे स्थितियां और अधिक कठिन हो जाती हैं और बाद में इसमें पछताना ही पड़ता है। इसलिए यह तय कर लें कि किसी भी समस्या को केवल बातचीत से ही हल करें।

में डुबकी लगाने की मजबूरी का निराकरण स्वतः ही हो जाता है। वैसे कितने भी तीर्थ करो, गंगा नहाओ और अन्यान्य धर्म स्थानों पर जाओ। जितना धर्म करोगे, उतना अधिक फल मिलेगा। लेकिन मजबूरी खत्म हो जाती है। आस-पड़ोस भी देखता है, चर्चा होती है कि फलां-फलां के घर में बहुत शिष्टाचारी लोग हैं। उनके बीच कितना प्यार-प्रेम है, आदि-आदि बातें होती हैं। यही सब मिलकर स्वस्थ समाज का निर्माण करते हैं। जब समाज के सब लोग प्रसन्नता पूर्वक भाईचारे से साथ-साथ जीवनयापन करते हैं तो भगवान को भी प्रसन्नता होती है। वह अपने बच्चों को प्रसन्न ही देखना चाहते हैं।

इसके साथ ही जो लोग अपने जीवन में देव पूजन करते हैं उनका भी अभीष्ट फल उन्हें अवश्य ही प्राप्त होता है। ब्राह्मण का सम्मान भी भगवान को प्रसन्न करता है। ब्राह्मण समाज को मार्ग दिखाने वाला भगवान द्वारा नियुक्त मार्गदर्शक है। उसका सम्मान अवश्य ही करना चाहिए। गुरुजन जीवन को काया पलट करने वाले साक्षात् भगवान ही हैं। वह इस धरती की विधियां तो सिखाते ही हैं। साथ ही पारलौकिक क्रियाएं भी सिखाते हैं। जिससे **'शरीर के साथ भी और शरीर के बाद भी'** दोनों स्थितियों, में फायदा मिलता है। विद्वानों का सम्मान और उनका संग करना, समाज में जीने के व्यवहार का रास्ता प्रशस्त करना है। उनका संग आपको समाज के उच्चतम शिखर पर स्थापित कर देगा, शर्त यही है कि ज्ञान प्राप्त करो और उसका सदुपयोग करो। आपके जीवन में पवित्रता होनी चाहिए, चित्त सरल होना चाहिए, मन एकाग्र होना चाहिए। इससे समाज में आपकी ग्राहयता बढ़ जाएगी। आपके वचन कर्णप्रिय होंगे। लोग आपका संग करने को उत्सुक रहेंगे, लालायित रहेंगे। यह ठीक वैसे ही होगा जैसे कि पुष्प पर भंवरा डोलता है। कैक्टस पर

विनम्रता और पवित्रता का धारण करने वाला मनुष्य पाप से बचा रहता है। जिसका अंतःकरण शुद्ध है वह पाप करने की सोच ही नहीं सकता। वैसे भी पाप करने की वास्तव में कोई आवश्यकता नहीं है। भगवान ने पशु, पक्षी, कीट, पतंगों को जीवन जीने का साधन दिया है फिर हम तो मनुष्य हैं। वह जीव जब अपने लिए नहीं सोचते तो फिर हमें चिन्ता क्यों होने लगी।

हमारा दाता बैठा है तो हम चिन्ता क्यों करें? पशु केवल भोग भोगने के लिए है, फिर भी वह खाने की चिन्ता नहीं करता। भगवान ने सबका भाग तय कर रखा है। पाप से की गई कमाई शरीर और आत्मा दोनों पर असर डालती है। पाप से कमाया अन्न कभी भी, किसी का भी भला नहीं कर सकता। पाप का परित्याग करना ही श्रेयस्कर है।

केवल कर्म पर स्वयं को केन्द्रित करो। कर्म वही है जो भगवान के लिए ही किया जाए। भगवान के लिए किए गए एक-एक कर्म का लेखा-जोखा चित्रगुप्त के पास रखा जाता है। उसी लेखा-जोखा को देखकर प्राणी की गति निश्चित होती है। अतः आज ही इसी क्षण से अपनी गति सुनिश्चित कर लें, ताकि बाद में पछताना ना पड़े।

गोदा अम्माजी

श्री श्री 1008 जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी राजनारायणाचार्य जी महाराज
भक्ति वाटिका पीठाधीश्वर, देवरिया (उत्तर प्रदेश)

कभी-कभी भगवान् श्रीमन्नारायण तथा भगवती श्रीलक्ष्मी जी भी अपनी अचिन्त्य लीला के लिए भक्त के रुप में तथा भक्ता के रुप में धरती पर पधारते रहते हैं। भक्तों की मान्यतानुसार व्रजलक्ष्मी भगवती राधा ही गोदारुप से भगवद्भक्त पेरियाल्वार को प्राप्त हुईं थीं, जिन्होंने मन्दिर में विराजमान श्रीवटपत्रशायी भगवान् से गहरा सम्बन्ध जोड़कर व्रज की गोपियों की तरह प्रेम प्रकट कर विवाह रचाकर सदा के लिये उन्हीं की हो गयीं थीं।

वही गोदा जिन्हें दक्षिण भारतीय श्रीवैष्णवजन आण्डाल ताय्यार नाम से सम्बोधित करते हैं। श्रीगोदाम्बाजी ने बताया है कि श्रीभगवान् से तथा श्रीभगवान् के भक्तों से सम्बन्ध जोड़कर ही श्रीभगवान् को प्राप्त किया जा सकता है। श्रीनारायण को अपना मानने से ही प्रेम होगा, प्रेम से ही उनकी प्राप्ति होगी। सत्य तो ये है कि केवल श्रीभगवान् ही अपने वास्तविक सम्बन्धी हैं। अयोनिजा गोदा जी किस प्रकार से सम्बन्ध जोड़ती हैं। गोदा अम्माजी शास्त्रीय मर्यादाओं का पालन करती हुईं, श्रीभगवान् की प्राप्ति के लिए श्रीभगवत् सम्बन्धियों से सम्बन्ध जोड़ती हुई बोल रही हैं-

ऊमैयो अन्निच्चेविडो वनन्दलो एमप्पेरुन्तुयिल्
मन्दिरप्पट्टालो, मामायन् माधवन् वैंहुन्दनेन्नेन्नु नामम्
पलवुम् नविन्नेलोरेम्बावाय्।।

श्रीभगवान् से नव प्रकार के सम्बन्ध शास्त्र निर्दिष्ट है- पितृपुत्र भाव, रक्ष्यरक्षक भाव, शेषशेषिभाव, भर्तृभार्या भाव, ज्ञातृज्ञेय भाव, स्वस्वामिभाव, आधाराधेयभाव, शरीरात्मभाव, तथा भोक्तृभोग्य भाव अस्तु। ये जीवमात्र के लिए

आत्मकल्याणकारी सम्बन्ध है।

श्रीमद्भागवत में कथा आई है कि भगवत्प्रपन्नपारिजात बुद्धिशत्तम परमभागवत उद्धव जी श्रीभगवान् के दिव्यधाम श्रीवृन्दावन एवं व्रजवासियों से सम्बन्ध जोड़ते हुए वहाँ की गोपियों की चरणधूलि, घास, पात , गुल्म , लता, वृक्षादि बनने के लिए प्रार्थना करते हैं-

आसामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां,
वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम्।

श्री पराशर भट्टर स्वामी जी ने श्रीरंगक्षेत्र से सम्बन्ध जोड़ते हुये श्रीरंगम् में निवास करने वाले कुत्ते का जन्म मांगा-

रंगेश्वर त्वत्पुरमाश्रितानां
रथ्याशुनामन्यतमो भवेयम्।

देहात्म सम्बन्ध से कोशों दूर रहने वाले परम संन्यासी श्रीयामुनाचार्य जी कहते हैं-

'पितामहं नाथमुनिंविलोक्य'

इसलिये श्रीगोदा अम्मा जी भागवत सम्बन्ध जोड़कर हम सभी कलियुगी जीवों को अपने आचरण से शिक्षित कर रही हैं कि श्रीभगवान् एवं उनके प्रेमी भक्तों के सम्बन्ध से ही श्रीभगवान् का परम अनुग्रह जीव को प्राप्त होता है।

श्रीकृष्ण प्रेमोन्मादिनी गोदाम्बा जी वैदिक सिद्धान्तों की छाया में कहती हैं- श्रीकृष्ण ही शेषी हैं, जबकि जीवमात्र उनका शेष है; इसलिये वे स्वामी हैं तथा जीवमात्र उनका दास है, वे सेव्य हैं, जीवमात्र उनका सेवक है ।

वे ही क्षीराब्धिनाथ, श्रीरघुनाथ, रंगनाथ, बदरीनाथ, मुक्तिनाथ हैं; उन्हें पाने के लिए केवल उन्हीं की आराधना, व्रत, उत्सव आदि विधेय है। उनकी प्राप्ति के लिए किसी अन्य देवी या देवता की आराधना आवश्यक न होकर केवल पूर्ण ब्रह्म श्रीकृष्ण की आराधना ही आवश्यक है। भगवान् श्रीकृष्ण केवल अपनी अमोघ कृपा या अतिशय प्रेम करने से ही प्राप्त हो सकते हैं । अन्तर्यामी की अपेक्षा अर्चावतार व्रजवासी गोपाल श्रीगोविन्द तो अर्चन -वन्दन तथा प्रेमावगाहन से ही प्राप्त होंगे।

जगज्जननी गोदाम्बाजी तिरुप्पावै के माध्यम से कृपा की वृष्टि कर रही हैं ।

अन्न वयल् पुदुवै आण्डालरंगर्कु. पन्नु तिरुप्पावै पल्पदियम्
इन्निशैयाल् पाडिक्कोडुत्ताल् नर्पामालै पूमालै
शूडिक्कोडुत्तालै च्चोल्लु।।'

श्रीविष्णुचित्तात्मजा गोदाम्बा जी के द्वारा गाए गए गीतों से लग रहा है कि गोदाम्बाजी गोविन्द प्रेमोन्मादिनी हो गयी हैं; इसलिए गोविन्द के प्रति पराकाष्ठा का प्रेम कर रही हैं। गोदाम्बा जी के नारायण, विष्णु, त्रिविक्रम, राम, कृष्ण, गोविन्द में अभेद है, इसीलिए तो गोविन्द का मंगलाशासन त्रिविक्रम, श्रीराम कहकर कर रही हैं।

इव्वुहलं अलंदाय अडि पोत्ति

श्रीत्रिविक्रम भगवान् के दिव्य चरणों की जय हो।

अंगु शेन्नु तेन् एलंगै शेत्ताय तिरल् पोत्ति

हे श्रीरामचन्द्र आपके पराक्रम की जय हो।

कुन्नु कुडैया एडुत्ताय् गुणं पोत्ति

हे गोवर्धन भूधरधर आपके गुणों की जय हो। ज्ञान की पराकाष्ठा प्रेम है। ज्ञानावस्था में भक्त भगवान् को सर्वरक्षक मानते हैं, जबकि प्रेमोन्माद दशा में तो अपने को ही भगवान् का रक्षक मानकर मंगलाशासन करने लगते हैं। साक्षात् निप्पिन्नै राधा ही गोदा बनकर प्रेमोन्माद में उपाय एवं उपेय श्रीगोविन्द का मंगलाशासन कर रही हैं।

अत्यन्तभक्तियुक्तानां न शास्त्रं नैव च क्रमः।

जल की महिमा : भारतीय संस्कृति में

महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(राष्ट्रपति सम्मानित)
प्रधान संपादक- "भारती" संस्कृत मासिक
(भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा
निदेशक-संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार)

भारतीय संस्कृति की यह मान्यता सुविदित है कि मानव शरीर पांच तत्वों का बना हुआ है। 'पांच तत्व का पींजरा तामे पंछी पौन' यह उक्ति प्रसिद्ध है। ये पांच तत्व हैं पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। इन्हें पंचभूत भी कहते हैं क्योंकि ये वे तत्व हैं जिनसे सारी सृष्टि की रचना हुई है। आधुनिक विज्ञान भी यह मानता है कि मानव शरीर में सर्वाधिक मात्रा यदि किसी तत्व की है तो वह है जल। हमारे शरीर में रक्त, रस, मज्जा आदि जो पदार्थ हैं उनमें जल का अंश कुल मिलाकर लगभग 70 प्रतिशत है। आयुर्वेद के अनुसार भी रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र ये सात धातुएं हैं जो शरीर को धारण करती हैं। इनमें अस्थि के अलावा शेष सब में जलीयांश बहुत है। पांच तत्वों के पिंजरे में ही प्राण और आत्मा सुरक्षित रहते हैं। दूसरी ओर प्राण के कारण ही ये पांचों तत्व शरीर में संगठित रहते हैं। प्राण निकलते ही वे विघटित होने लगते हैं और शरीर के पांचों तत्व पंच तत्व में मिल जाते हैं। इसी को कहते हैं पंचतत्वों का प्राप्त होना। हमारे वाङ्मय में वेदकाल से लेकर आज तक जल का यह महत्व शास्त्रों और काव्यों में प्रतिफलित होता आया है। शास्त्रों में प्रसिद्ध है कि अव्याकृत ब्रह्मा ने जब सृष्टि की रचना करनी चाही तो सबसे पहले उसने जल को उत्पन्न किया। मनु महाराज कहते हैं कि ब्रह्मा ने जल में सृष्टि का बीजवपन किया।

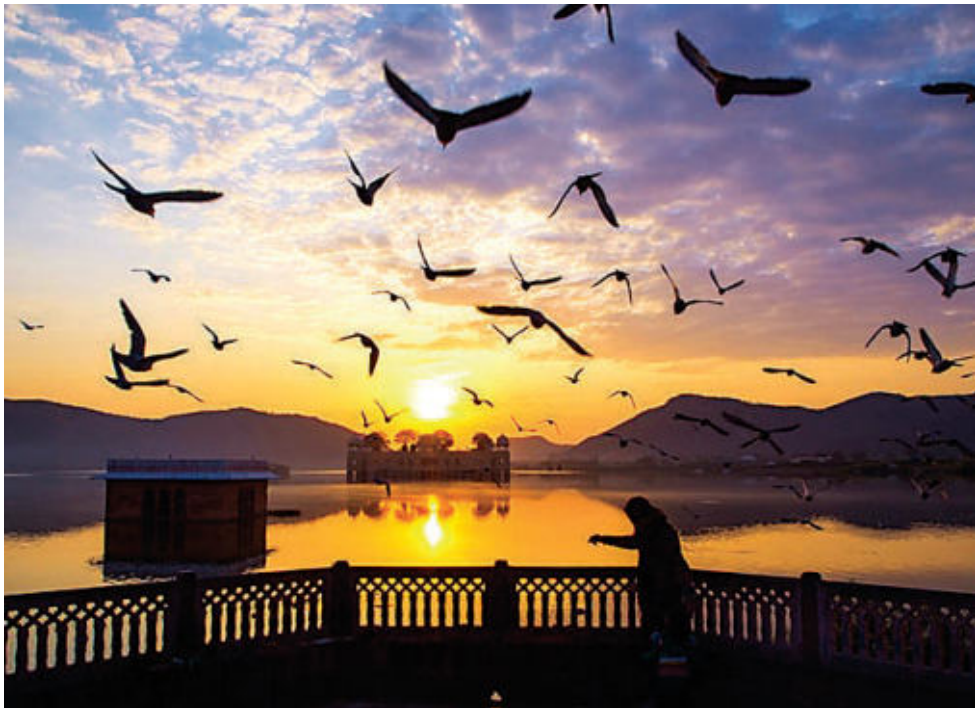

'अपएव ससर्जादौ तासु बीज-मवासृजत्।'

जल को विधाता की प्रथम सृष्टि माना जाता है। महाकवि कालिदास भी अभिज्ञान शाकुन्तलम् के मंगलाचरण में सबसे पहले जल का ही स्मरण करते हैं, **'या सृष्टिःस्रष्टुराद्या'** कालिदास के अनुसार अष्ट मूर्ति शिव की पहली मूर्ति जल स्वरूप है जो सृष्टि का भी प्रथम तत्व है। संस्कृत में वेदकाल में जल शब्द का प्रयोग कहीं नहीं मिलता है। वेद जल को आपः कहकर पुकारते हैं और हमेशा बहुवचन में ही उल्लेख करते हैं। वेदों में जो सृष्टि विज्ञान वर्णित है वह बतलाता है कि ब्रह्मा के चार पादों में से अव्यय ब्रह्म अचिंत्य और सूक्ष्म है। अक्षर ब्रह्म तत्व रूप है। उसका मूर्त स्वरूप क्षरब्रह्म कहा जाता है जिसकी पांच कलाएं - प्राण, आपः, वाक्, अन्न और अन्नाद ब्राह्मण ग्रन्थों में बताई गई हैं। प्राण वह तत्व है जो समस्त सृष्टि का आधार है ओर उसे गति देता है। आपः जलीय तत्व है और वाक्, पदार्थ और दृश्य प्रपंच का वाचक है। हमारे प्राचीन वाङ्मय में जल को अग्नि की माता कहा गया है। इस दृष्टि से जल और अग्नि एक ही तत्व के दो स्वरूप हैं।

आपः में जो तत्व समाविष्ट बताये गये हैं, वैदिक वाङ्मय के अनुसार वे भृगु और अंगिरा हैं। भृगु सोम तत्व है और अंगिरा अग्नि तत्व है। इसे पंडित लोग इस प्रकार भी बतलाते हैं कि आधुनिक विज्ञान में हाइड्रोजन के दो अंश और ऑक्सीजन का एक अंश जल में बताया जाता है वे ही भृगु और अंगिरा हैं। जयपुर के

पृथ्वी के ऊपर और पृथ्वी के अन्दर (भूगर्भ में) जो जल है वह हमारा जीवनाधार है। यह बात वेदों से लेकर पुराणों और शास्त्रों तक स्पष्ट की गई है।

प्रसिद्ध वैदिक विज्ञान समीक्षक पण्डित मधुसूदन ओझा ने जो वेद विज्ञान विस्तार से बताया है उसमें आपः तत्व का बड़ा विशद वर्णन है। उन्होंने स्वयंभू लोक और परमेष्ठि लोक का जो विवेचन किया है उसमें परमेष्ठि लोक को आपोमय तत्व से बना बताया है।

यह तत्व ब्रह्माण्ड में सूक्ष्म रूप से व्याप्त है। सांख्य आदि भारतीय दर्शनों में सृष्टि की प्रक्रिया बतलाते हुए सत्त्व, रज और तम तीन गुण, प्रकृति, महतत्व और अहंकार का उद्भव, फिर पंच तन्मात्रों व पंचभूतों का उद्भव बतलाते हुए स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार पंचतन्मात्रों से पंचभूतों के उद्भव की प्रक्रिया सृष्टि का कारण बनती है। पहले आकाश, फिर वायु, फिर अग्नि, फिर जल और फिर पृथ्वी का उद्भव होता है। यह संचर क्रम है किन्तु हम सामान्यतः प्रतिसंचर यानी उल्टे क्रम से पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश का नाम लेते हैं जो हमारी ओर से मूलस्रोत की ओर देखने की प्रक्रिया के कारण होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि आकाश, वायु और अग्नि के बाद जल का उद्भव हुआ। फिर इसे प्रथम सृष्टि क्यों मानते हैं। इसका एक उत्तर तो यह है कि आकाश के साथ ही अपः तत्व मूल रूप में पैदा हो जाता है किन्तु उसके भूतात्मक स्थूल रूप का उद्गम अग्नि से होने के कारण कहा जाता है 'अग्नेरापः अद्भ्यः पृथ्वी'। वैदिक वाङ्मय में भूपिण्ड की रचना का क्रम अद्भुत ढंग से बताया गया है। शतपथ ब्राह्मण की स्थापना यह है कि जल से फेन, मृदा, सिकता, शर्करा, अश्मा, अयः और हिरण्य बनते हुए पृथ्वी का उद्गम होता है। इन आठ तत्त्वों से पृथ्वी बनी है। ये तत्व इसी क्रम से उद्भूत होते हैं। इन्हें ही आठ वसु भी कहा जा सकता है। जल की महिमा सृष्टि में जिस प्रकार उल्लेखनीय है उसी प्रकार मानव जीवन के लिए उसका महत्व भी आदिकाल से स्वीकार किया गया है। संस्कृत में जल के जो नाम मिलते हैं उनमें उसे जीवन भी कहा गया है, भुवन भी और वन भी। 'जीवनं, भुवनं, वनम्'। अमर कोष का यह कथन सिद्ध करता है कि जीवन में, ब्रह्माण्ड में और हमारे परिवेश में जल मूल तत्व के रूप में व्याप्त है।

विज्ञान भी बतलाता है कि हमारे शरीर में जल की कितनी मात्रा विद्यमान है। उस जल की वृद्धि, उसका विरेचन, उसके द्वारा शरीर के बहुमूल्य तत्वों की प्रतिपूर्ति रोगों का उपचार यह सब मानव के जीवन के लिए कितनी आधारभूत सामग्री है यह आज की पीढ़ी जान ही गई है। पृथ्वी के ऊपर और पृथ्वी के अन्दर (भूगर्भ में)

जो जल है वह हमारा जीवनाधार है। यह बात वेदों से लेकर पुराणों और शास्त्रों तक स्पष्ट की गई है।

वैदिक वाङ्मय में, उपनिषदों में और भारतीय दर्शन की शाखाओं में जल को सृष्टि के एक महत्वपूर्ण पदार्थ के रूप में सर्वत्र वर्णित और परिभाषित किया गया है। वैदिक वाङ्मय में सृष्टि विज्ञान का विवेचन करते हुए जल को सृष्टि के उद्गम अर्थात् विसृष्टि की प्रक्रिया के एक महत्वपूर्ण उपादान के रूप में बताया गया है जबकि सृष्टि के बाद पंचभूतों में से एक भूत के रूप में उसका जो स्थान है उसका विवेचन सांख्य, न्याय, वैशेषिक आदि सभी दर्शनों में विस्तार से हुआ है। जहां गोपथ ब्राह्मण ने उसका विसृष्टि के उपादान के रूप में वर्णन करते उसे भृगु और अंगिरा के संघात के रुप में आदिम तत्व की तरह विवेचित किया है। वहीं दर्शनों ने उसे केवल द्रव्य या पदार्थ माना है। गोपथ ने **'आपो भृग्वंगिरो रुपमापो भृग्वंगिरोमयं'** लिखकर यह बताया है कि जल तत्व तो सूक्ष्म तत्वों का संघात है जिन्हें भृगु और अंगिरा कहा गया है। ये ऋषियों के नाम तो हैं ही, सूक्ष्म तत्वों के नाम भी हैं। एक दृष्टि से इन्हें अग्नि और सोम का रूप भी माना जा सकता है। भृगु सोम का प्रतीक है और अंगिरा अग्नि का। आधुनिक विज्ञान को प्राचीन वाङ्मय से समन्वित करने वाले कुछ मनीषियों ने इन्हीं दो तत्वों को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन भी बतलाया है।

सांख्य आदि दर्शनों ने सृष्टि के उद्गम की प्रक्रिया यह बतलाई है कि अव्याकृत कारण ब्रह्म से प्रकृति उद्भूत हुई फिर महत्तत्व, फिर अहंकार, फिर पंचतन्मात्र और फिर पंचभूत और इन्द्रिय। पंचभूतों में जो जल है वह द्रव्य है जबकि आदिसृष्टि के रूप में जिस जल का उल्लेख किया गया है वह सूक्ष्म तत्व है जिसमें सुनहरी अण्डा या कोस्मिक ऐग पैदा होता है। उस अण्डे को हिरण्य गर्भ भी कहा गया है। चूंकि सारी सृष्टि उस अण्डे से पैदा हुई है अतः उसी में पंचभूतों की उत्पत्ति भी आ जाती है। इससे पूर्व जो प्रथम आप तत्व था जिसमें ब्रह्मा ने बीज बोया था, वह सूक्ष्म तत्व के रूप में पहली सृष्टि कही जा सकती है। यही रहस्य है जल को आद्य सृष्टि कहने का तथा समस्त जगत के जलमय होने का। यही बात दूसरी तरह भी बताई जा चुकी है कि यह अप तत्व तब भी था जब केवल आकाश था। चारों वेदों को क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य और आप् तत्व का प्रतीक मानने वाले विद्वान ऋग्वेद को अग्नि का, यजुर्वेद को वायु का, सामवेद को आदित्य का और अथर्ववेद को आप् का रूप मानते हैं।

वैशेषिक दर्शन बड़ा पुराना दर्शन है जिसका दृष्टिकोण द्रव्यवादी है। यह जगत में सात - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव पदार्थ मानता है। द्रव्यों का विवेचन करते हुए वह नौ द्रव्यों को यों गिनाता है पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन। यहां जल का विवेचन करते हुए वह स्पष्ट करता है कि जल दो तरह के होते हैं नित्य और अनित्य। हम जिसे जल के रूप में इस्तेमाल करते हैं वह स्थूल द्रव्य अनित्य जल है जबकि नित्य जल अर्थात् आप् सूक्ष्म तत्व के रूप में विश्व में व्याप्त है। इस प्रकार इन्द्रियगम्य भूतों को जिन्हें पंचभूत कहा जाता है गिनाते हुए हमारे समस्त दर्शन जल को पंचभूत समुदाय के एक सदस्य के रूप में स्थान देते हैं। जल से ही पृथ्वी पैदा हुई है। यह प्राचीन मान्यता इन दर्शनों को भी मान्य है।

संस्कृत साहित्य में तो जल का वर्णन भाँति- भांति से किया गया है। वृष्टि का जल, नदी सरोवरों का जल, समुद्र का जल-सभी के रूप में जल ने कवियों की कावयित्री प्रतिभा को आकर्षित किया है। जलक्रीड़ा, श्रृंगार रस का प्रमुख अनुभाव रहा है। गंधर्व तो जलक्रीड़ा के विशेष शौकीन हुआ करते थे। जल को लेकर संकल्प करना या शपथ लेना बहुत प्राचीनकाल से सत्य क्रिया का प्रतीक रहा है। जल छोड़े बिना कोई दान सफल नहीं होता। शुद्धि के लिए जल अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है। वैसे अग्नि और वायु तक से शुद्धि का विधान है पर सर्वप्रमुख है जल। इसके सैकड़ों पर्याय संस्कृत में मिलते हैं। अंभः, सलिल, तोय उदक, वारि, नीर, पय आदि सुललित शब्द जल के विभिन्न रूपों का चित्रण करते हैं। जल की महिमा अनन्त है। वेदकाल से लेकर आधुनिक काल तक उसकी महिमा का यह विवेचन तो उस समुद्र की एक तरंग मात्र है।

भारत में जल विषयक इस सुदीर्घ दार्शनिक और सांस्कृतिक चिन्तन की यह परिणति स्वाभाविक ही थी कि धर्म और पुण्य के कार्यों के लिए जल की महिमा सदियों से जन-जन के मानस में पैठ गई। यह विधान किया गया कि मानवों, पशुओं और पक्षियों को जल पिलाना, जल का दान और जल में स्नान अत्यन्त पुण्य का कार्य होगा। तीर्थों के जल में स्नान सबसे बड़ा पुण्य कार्य माना गया। नगर-नगर में गांव-गांव में सदियों से प्याऊ लगाकर को जल पिलाने की परम्परा आज भी देखीं जा सकती है। महानगरीय संस्कृति इस परम्परा को डकार जाए तो आश्चर्य नहीं। गांवों में कुएं के साथ रहट और उसके पानी से पशुओं के पीने के लिए पानी की खेली सदियों से चलती रही है। पेड़ों पर पक्षियों के लिए 'परींडे' बांधने की परम्परा भी इसी का प्रतीक है। इस प्रकार जल बना हुआ है सह स्त्राब्दियों से भारतीय संस्कृति की संजीवनी, जीवन का आधार, पुण्य का प्रतीक और अस्तित्व का सम्बल।

- सी/8, पृथ्वीराज रोड, जयपुर

Rāmānujācārya's Philosophy of Education

Prof.
M.A.Lakshmithathachar &
Dr. M.A. Alwar

Introduction

Of late, it has become a very difficult proposition to know and understand what is really meant by the term education. This is because, education, as a system in general is at crossroads today. While it would be appropriate to first analyze the concept of education as it is understood today and it was during the various periods of time earlier, it is also pertinent to study what education actually means to the facilitators of education, that is, the parents to students who undergo education in general.

The term 'education' is more meaningfully understood when one tries to analyze the Sanskrit and Sanskrit equivalent of the word education which is denoted by the word 'śikṣaṇa'. The word 'śikṣaṇa' is derived from the root 'śikṣa vidyopādāne' which means to attain vidyā (knowledge). Here, once again the word knowledge denotes not some skills used to earn a livelihood or have a profession or vocation. On the other hand, the word knowledge denoted by the Sanskrit word 'vidyā' in its original sense, means the knowledge of the divine or the Supreme Self which leads one to the path of salvation and ultimately liberates him from this vicious cycle of births and deaths namely Samsara.

Today's scenario

Of late, it is seen that parents encourage and even insist their children to study highly remunerable job-oriented courses without generally understanding or appreciating the inherent talent the child possesses. This trend which has been in vogue for the last seven to eight decades is the result of peer-pleasure and inappropriate comparisons and contrasts with their friends and relatives. This has stooped to abysmal levels of boasting and showing off. We generally see that the conversations among middle-aged ladies focuses on each mother boasting about her son or daughter studying engineering or medical which they deem to be an end in itself, and further a lady who is for some reason unable to send her son or daughter to study engineering or medical undergo a deep sense of inferiority resulting in great depression and having telling effects on her health and wellbeing. It is also a fact that such parents feel that they are less privileged members of the society. This trend has led to several deep problems not only in the lives of the parents but also students, teachers and society at large. Children who are unable to make it to the engineering or the medical courses are looked down upon by their own parents and close relatives who many a times chide them by comparing them with their so-called better-off contemporaries. This has led to several children undergo undue mental agony and resulting in several physical and mental diseases that result in fatalities also. Thus, as far as the concept of education is concerned the so-called educated society is in a state of deep confusion which is neither realized nor acknowledged by those who are steeped in that confusion.

Problems that plague the field of education today

How does one decide what sort of education a child deserves? Should it be based on the inherent talents the child may possess? How does one further notice or understand the area in which the child is talented? Or should it be dictated by considerations of money prestige and such other criteria? The parents of today are totally at a loss to even think about the issues mentioned above. They have fallen into the trap of a rat-race which is well orchestrated by the media consisting of the visual and print mediums. Thus we see that success in education is based purely on the marks that a person obtains in the current system of examination which only encourages rote learning

rather than focusing on empowering the students to think creatively or independently solve problems in various strata of life and also to overcome physical and mental challenges that one is bound to encounter as life progresses. Another major lacuna of the current education system prevail in the country is that the level of knowledge of general aspects of life associated with nature, environment, physical and mental wellbeing, harmony between humans and nature etc. is extremely low due to which the students who form the next generations of the country are at a loss figure out their priorities that are to be pursued. To add to all these disadvantages is the problem presented by the abuse and misuse of electronic gadgets that are causing utmost harm and almost no proper advantage. Students of all ages including those studying at the kindergarten level are seen to be totally addicted to these gadgets which is causing great harm to their mental and physical faculties which are well documented and explained in various forums. Thus, the situation of education today is very bleak and there does not seem to be much hope even at the end of the tunnel.

Further, in the modern context not many people including the so-called educationists are able to distinguish between literacy and education. This is more so regarding the parents of the younger generations that are studying up to the post-graduate level. Literacy is generally understood as the capability to read and write. Schools today largely focus on attaining literacy and feeding some information about some issues pertaining to certain fields that are related to life.

In the context of computers, one comes across mutually related terms like data, information and finally knowledge. Today, schools at best impart knowledge at the level of data or information but seldom go to the level of knowledge. This continues to happen at the graduate and the post-graduate level also.

Therefore, one can appreciate the fact that now is the best time to seek answers and solutions to the problems mentioned above by taking a deep and objective look into our traditional texts that have an abundant amount of information on all aspects of education?

Indian concept of education

The traditional Indian system of education focuses on not only helping the student to acquire knowledge but also empowers him/her to go further and attain wisdom, which is the result of introspection and realization which is based on the knowledge that is acquired. Such a system of education when it is imparted and undergone in letter and spirit will enable a student to become a person who attain fulfilment and leads a totally meaningful life here in this world and is eligible to attain liberation hereafter.

When one starts to think what traditional Indian concept of education is all about one finds it difficult to exactly pinpoint one or two specific aspects, Indian concept of education is all about molding a person into a complete human being, who can hold his sway in various spheres of life including the academic, educational, philosophical, social and spiritual spheres.

A person who is educated in the traditional Indian method would be adept in leading a life that is in consonance and harmony with nature. His very being is for the wellbeing of society at large without focusing on gratification of his own instincts or egoistic pursuits aimed at self-aggrandizement as is the case today. A successful education is not measured in terms of money a person has amassed or the extent of physical properties like real estate, corporate companies and such other things he has acquired. It is also not measured in terms of the positions a person is holding in public or corporate circles. It is actually measured in terms of the knowledge of his own self which is enshrined within his persona and the various aspects associated with it. It is further measured in terms of the worldview he holds. In other words, it is a way in which he views the external world and his

A person who is educated in the traditional Indian method would be adept in leading a life that is in consonance and harmony with nature. His very being is for the wellbeing of society at large without focusing on gratification of his own instincts or egoistic pursuits aimed at self-aggrandizement as is the case today.

relationship vis-à-vis the world at large.

Rāmānujācārya's views on education

The Śāstras or the traditional Indian knowledge systems hold that the individual soul (jīvātman) and the body within which it is enshrined is the piṇḍāṇḍa (microcosm) which is not only a part and parcel of the universe but a miniature model of the universe which is known as the brahmāṇḍa (macrocosm). Those that are educated in the right manner are those who can obtain a vision of everything that is happening in the universe just by looking inward into their own self, for, the relationship between the macrocosm and microcosm is such that all the changes that occur in the macrocosm are reflected in the microcosm. This indeed is the height of true education one can achieve to put it in the real sense of the term. To achieve the above is the ultimate aim of education as we see it from the core Indian point of view. Such an achievement which is an end in itself has several corollaries occurring to the person automatically. It bestows on him the knowledge of the Supreme God which in turn makes him omniscient and further bestows on him several other benefits that makes him a super man who is omnipotent and who is also omnipresent by means of his attributive consciousness known as dharmabhūta jñāna in Viśiṣṭādvaita terminology. After he leaves this body, he attains instant liberation wherein he is delivered beyond the circle of births and deaths and also is able to enjoy supreme bliss stated by the word brahmānanda. The Upaniṣats enumerate several other benefits a liberated person enjoys which are well espoused and explicated by Rāmānujācārya in his various works like Śrībhāṣya, Gītābhāṣya and the Vedarthasaṁgraha. This is well summarized by the following statement found in our scriptures:

तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तये।
आयासायापरं कर्म विद्यान्या शिल्पनैपुणम्॥

Śrīviṣṇupurāṇa 1-19-41

meaning: Work is that which is does not lead to bondage (puṇya and papa). Learning is that which leads to liberation. All other activity is mere exertion and all other learning is mere hairsplitting.)

Conclusion

This, in short is the purport of the view of Rāmānujācārya on education in general. That does not mean that Rāmānujācārya neglected the other fields of education that is required to earn livelihoods as is mentioned in the modern contexts. The beauty of Rāmānujācārya's philosophy is that he never ignored the worldly needs of any human being. While he openly acknowledged that everyone should aspire to lead a happy and prosperous life in this world he emphasized that it should be done within framework of righteousness and restraint – without harming fellow-beings, in harmony with nature and its other constituents (which is termed by some scholars as eco-centric and not egocentric) and with a view that all this is the manifestation of the Supreme God and all aspects of this life are a service unto that Supreme God. To help leading one's life with such a perspective is truly the principal and final aim of education, according to Rāmānujācārya.

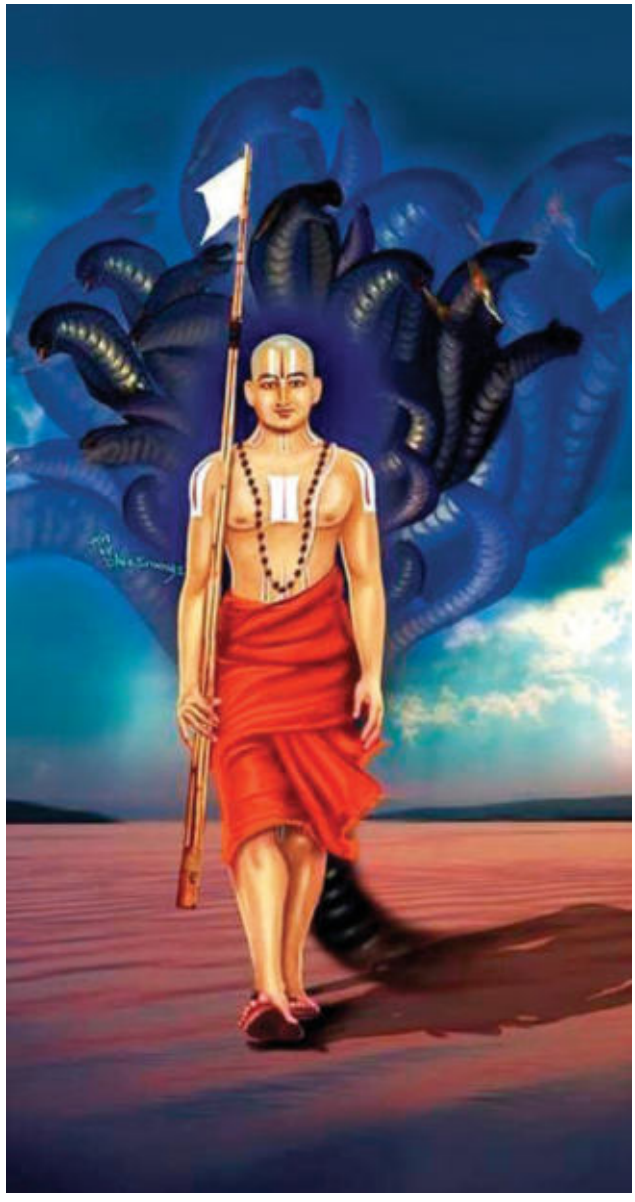

INDIA: A FUTURE WORLD POWER

Dr. Karan Singh
Member-RajyaSabha

Power can be defined at various levels. As far as culture is concerned, India has always been a super power. The Indian cultural efflorescence many centuries ago spread across South and Southeast Asia, both through Hinduism and Buddhism. The great monuments of Angkor Vat in Cambodia, Borobodur in Indonesia and numerous temples in many South and Southeast Asian countries stand witness to the extraordinary Indian creativity in her cultural tradition. A significant fact is that on no occasion was this cultural renaissance spread by force of arms, unlike events in other parts of the world. Today India remains a major cultural hub, and as President of the Indian Council for. Cultural Relations it is my task to present India's multi-faceted and pluralistic culture around the world.

On the economic dimension also, the concept that India was always a poor country is entirely misplaced. In fact it was its unparallel riches and affluence that attracted the unwelcome attention of invaders and colonialists from Central Asia as well as Europe. It was only after centuries of colonial domination that India was transformed into what is known as "a poor Country". Here again, on the 60th birthday of our Independence, we are committed to take major steps for the mitigation and ultimate reduction of poverty from this beautiful land. Over the last three years the Government of India has allotted unprecedented funds for schemes directly targeted at the citadels of poverty such as the Rural Employment Guarantee Scheme, the Universal Education Scheme, the Mid-day Meal Scheme, the Urban Regeneration Scheme and the Golden Quadrilateral Scheme which would link major cities with the network of modern roads. These will certainly have an impact over the next few years. Meanwhile our economy is growing at over 9 percent per annum, our foreign exchange reserves are now over 2.3 billion US dollars. Indian companies are making a major foray into the world market, and there is no doubt that in the years to come India will develop as a major economic force. The third dimension of power revolves around political stability. We have worked a vibrant democracy for six decades despite the many difficulties that we faced after partition, and although our system is full of tension and controversy we are proud to live in a fully democratic country with free elections, justiciable fundamental rights, a free press and media and an independent judiciary. This democracy gives India a stability which, unfortunately, few of our neighbouring countries enjoy. The inherent power of democracy is a strong link between India, the European Union and other democracies around the world. Finally power can be interpreted in terms of military strength. Although dedicated to peace and ultimate nuclear disarmament, India has over these decades built up a strong military deterrent and is now capable of ensuring its security against threat from any quarter. To sum up, therefore, there is no doubt that India is emerging as a major player on the world scene. We would, however, like to make it clear that having no territorial ambition, India's role will essentially be one of spreading international goodwill and strengthening stability around the world, particularly in our own neighbourhood. The future world that we envisage will be a multi-polar one in which there will be several poles including U.S., the European Union, Russia, Japan, China and India. Countries like Brazil and Nigeria also are expected to grow considerably. It is only if we strengthen the forces of peace and understanding, interfaith harmony and people to people friendship around the world, that we can hope to overcome the present difficulties and establish a stable world order with a just and humane global society.

आधुनिक समाज में ज्योतिष की उपयोगिता

के.एन.राव
लेखक

आजकल बदलती हुई आधुनिक परिस्थितियों को देखकर यह कहना उचित होगा कि ज्योतिष से ज्यादा उपयोगी विषय समाज के लिए शायद ही दूसरा कोई और हो। लेकिन इसे समझने से पहले यह जानना आवश्यक है कि ज्योतिष एक आध्यात्मिक या परा विद्या नहीं है। मुण्डकउपनिषद् के प्रथम खण्ड के पंचम श्लोक में आता है:-

तत्रपरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः
शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति।
अथ परा यया तदक्षरमधिगम्तये।।5।।

व्याख्या उन दोनों में से जिसके द्वारा इस लोक और परलोक सम्बन्धी भोगों तथा उनकी प्राप्ति के साधनों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है, जिसमें भोगों की स्थिति, भोगों के उपभोग करने के प्रकार, भोग-सामग्री की रचना और उनको उपलब्ध् करने के नाना साधन आदि का वर्णन है, वह तो अपरा विद्या है। जैसे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ये चारों वेद। इनमें नाना प्रकार के यज्ञों की विधि् का और उनके फल का विस्तारपूर्वक वर्णन है। जगत् के सभी पदार्थों का एवं विषयों का वेदों में भली भाँति वर्णन किया गया है। यह अवश्य है कि इस समय वेद की सब शाखाएँ उपलब्ध नहीं हैं और उनमें वर्णित विविध विज्ञान सम्बन्धी बातों को समझने वाले भी नहीं है। वेदों का पाद् अर्थात यथार्थ उच्चारण करने की विधि का उपदेश 'शिक्षा' है। जिसमें यज्ञ-याग आदि की विधि बतलायी गयी है, उसे 'कल्प' कहते हैं। गृह्यसूत्रा आदि की गणना कल्प में ही है। वैदिक और लौकिक शब्दों के अनुशासन का प्रकृति प्रत्यय विभागपूर्वक शब्द साधन की प्रक्रिया, शब्दार्थ बोध के प्रकार एवं शब्द प्रयोग आदि के नियमों के उपदेश का नाम 'व्याकरण' है। वैदिक शब्दों का जो कोष है जिसमें अमुक पद अमुक वस्तु का वाचक है। यह बात कारण सहित बतायी गयी है, उसको 'निरुक्त कहते हैं। वैदिक छन्दों की जाति और भेद बतलाने वाली विद्या 'छन्द' कहलाती है। ग्रह और नक्षत्रों की स्थिति, गति और उनके साथ हमारा क्या सम्बन्ध है- इन सब बातों पर जिसमें विचार किया गया है, वह 'ज्योतिष' विद्या है। इस प्रकार चार वेद और छः वेंदांग -इस दस का नाम अपरा विद्या है। और जिसके द्वारा परब्रह्म अविनाशी परमात्मा का तत्वज्ञान होता है, वह परा विद्या है। उसका वर्णन भी वेदों में ही है, अतः उतने अंश को छोड़कर अन्य सब वेद और वेदांग को अपरा विद्या के अन्तर्गत समझना चाहिये।

और दूसरी बात यह है कि कुछ लोगों को ज्योतिष आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित करता है और ज्योतिष उनके लिए एक आध्यात्मिक विद्या बन जाती है। आधुनिक प्रसंग में ज्योतिष का महत्व समाज के लिए क्या है, इसे निम्न शीर्षकों के अंतर्गत समझा जा सकता है:-

शिक्षा

आज बच्चे जब अपनी विद्यालयी शिक्षा पूर्ण करके अपने कैरियर के लिए विषयों का चुनाव करते हैं, तब ज्योतिष उनके मार्ग दर्शन का काम करता है और आप सबको मालूम ही है कि सामान्यतः शिक्षा, कला (art) व्यापार (Commarce) विज्ञान (Science) आदि विभागों में बँट जाती है और इसमें भी आगे चलकर और कई शाखाएँ हो जाती हैं जैसेद्ध इन्जीनियरिंग, एम.बी.बी.एस, चार्टड एकाउण्टेंट आदि। किसी भी बच्चे की कुंडली से उसका, किस विद्या की किस शाखा की ओर झुकाव है, यह स्पष्ट हो जाता है। यहाँ पर शैक्षणिक, मनोवैज्ञानिक (Educational Psychologist) भी कुछ नहीं कर पाते, सिवाए इसके कि वे घण्टों प्रश्न-उत्तर करके किसी नतीजे पर पहुँच सकें क्योंकि उनके पास इसे बताने का कोई और माध्यम है ही नहीं। जबकि ज्योतिष में यह आसानी से बताया जा सकता है। ज्योतिष में इस पर काफी शोध हो भी चुका है और हो भी रहा है।

कैरियर

किस रास्ते जाएँ या कौन सा कैरियर अपनाएँ, इसमें ज्योतिष बहुत सहायक है। आजकल इस पर ज्योतिष की उपयोगिता इतनी अधिक बढ़ चुकी है कि बहुत से लोग इसका लाभ उठाने लगे हैं। आजकल लोग अक्सर ये सवाल पूछते हैं- नौकरी के लिए विदेश जाएँ या देश में ही रहें, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैंड आदि देशों में जाकर वहाँ बस जाएँ कि नहीं आदि।

आज के बदलते समय में लोगों के लिए शिक्षा और कैरियर का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है।

विवाह

आज इस बदलते हुए युग में विवाह का महत्तव थोड़ा घट गया है। आपको ऐसे बहुत से लोग मिल जाएंगे, जो बिना विवाह के जीवन बिताने को तैयार हैं। इसमें अब लड़कियाँ भी शामिल हो गई हैं। दूसरा, पढ़े-लिखे लोगों में आजकल अन्तर्जातीय विवाह का चलन बढ़ता ही चला जा रहा है। साथ ही वैवाहिक जीवन कैसा होगा, पति-पत्नी के बीच सम्बन्ध इत्यादि कैसे रहेंगे, यह सब ज्योतिष से बताना काफी सरल होता है।

संतान

अब प्रश्न उठता है संतान का। चिकित्सक एक गर्भवती महिला का परीक्षण करके गर्भ में होने वाले बच्चे के बारे में बता देता है। परन्तु इसमें समय कितना लग जाता है? लेकिन ज्योतिषी एक सही समय पर बनी हुई जन्म-कुंडली को देखकर बता देता है कि गर्भ और बच्चे की स्थिति क्या है, क्या बच्चे के जन्म में कोई बाध तो नहीं। साथ ही किसी भी स्त्री की कुंडली में बच्चे होने की सम्भावना है या नहीं और यहाँ तक कि बच्चा पैदा होने का सही समय जितनी आसानी से एक ज्योतिषी बता सकता है, उतनी आसानी से चिकित्सक नहीं बता सकता। इस विषय पर हजारों लोगों को दिल्ली शहर में कुछ अच्छे चरित्रवान ज्योतिषी अच्छी सलाह दे रहे हैं।

ज्यों-ज्यों सामाजिक जटिलताएँ बढ़ती चली जाएंगी, त्यों-त्यों समाज को ज्योतिषी की शरण में जाना ही पड़ेगा। लेकिन यह जानना जरूरी है कि ज्योतिषी चरित्रवान और ईमानदार हो। साथ ही, उसका ऊहापोहपटु होना भी आवश्यक है।

जमीन-जायदाद

आधुनिक जटिल समाज में मनुष्य एक जगह से दूसरी जगह, एक प्राँत से दूसरे प्राँत, एक देश से दूसरे देश में जाकर बसने की कोशिश करता है। वह वहाँ कुछ जायदाद खरीदकर और मकान बनाकर बस भी जाता है। यह सब भी एक ज्योतिषी पहले से ही देखकर बता सकता है। बहुत से लोगों को ऐसी ज्योतिषीय सलाह बड़ी काम की और बड़ी सामयिक भी लगती है।

बिमारी

आज जब हम प्रदूषण की बात करते हैं तो उससे होने वाली

अनेक बिमारियों पर भी चर्चा होने लगती है। प्रदूषण से होने वाली बिमारियाँ हों या कोई अन्य बिमारी इसके बारे में भी एक ज्योतिषी, भविष्यवाणी करके आगे आने वाले समय के लिए किसी भी जातक को सचेत कर सकता है। जबकि एक चिकित्सक बीमार पड़ने पर ही उपयोगी सिद्ध होता है और किसी मरीज का ही ईलाज कर सकता है।

इसके पश्चात सबसे मुश्किल और सबसे अंत की समस्या होती है-जीवन का अंत होना। ज्योतिषी यहाँ कुछ हद तक ही सफल होता है और लोगों को सचेत भी कर सकता है।

किन्तु यह सब होने के लिए ज्योतिषी का चरित्रवान होना आवश्यक है। महर्षि पराशर ने एक अच्छे ज्योतिषी की परिभाषा में 'जितेन्द्रिय' शब्द का प्रयोग किया है। जिसका अर्थ है-ज्योतिषी स्वयं प्रलोभनों में न पड़कर पृच्छक को सही उत्तर देकर भविष्य की तैयारी करा देता है।

अंत में यह कहना चाहूँगा कि ज्योतिष की शिक्षा पहले पारम्परिक होती थी और परम्पराएँ आजकल टूट चुकी हैं। उसकी जगह ज्योतिष की पढ़ाई एक कॉलेज की पढ़ाई की तरह हो गई है, लेकिन इसमें अभी काफी प्रगति होनी बाकी है। फिर भी अगर ये नव-शिक्षित ज्योतिषी ईमानदारी से काम करें, तो बहुत अच्छा मार्गदर्शन मिल सकता है। अब प्रश्न यह उठता है कि जब ज्योतिष जीवन के सर्वांगीण विषयों और दशा का मार्ग दर्शन कर सकता है, तो यह कार्य एक ही ज्योतिषी पर छोड़ा जाए या दो-तीन ज्योतिषियों का एक दल बन जाए, जो सलाह करके आपस में लोगों का मार्ग दर्शन करें। अंत में यह बात मन में रखनी जरूरी है कि यदि ज्योतिषी में नैतिकता न हो, तो वह समाज के लिए घातक बन जाता है। इसलिए दो-तीन ज्योतिषी एक दल बनाकर तथा यथोचित पारिश्रमिक लेकर लोगों को सलाह दें।

हाँ ज्योतिष की चर्चा होती है, स्वाभाविक ही है कि वहाँ उपायों की चर्चा भी हो। आजकल जब भी ज्योतिष की चर्चा होती है, उपायों की ज्यादा होती है क्योंकि उससे ज्योतिषी का पैसा बनता है और ज्योतिष परम पावन शास्त्र न रहकर पैसे कमाने की विद्या मात्र रह गई है। इसलिए उपायों के बारे में ज्योतिष के प्रमाणिक ग्रंथों में क्या कहा गया, यह भी जानना जरूरी है बृहत्पाराशर होराशास्त्र में स्तोत्र पाठ और दान पुण्य की बात कही गई है। समय-समय पर अनेक महात्माओं द्वारा उपदिष्ट ग्रह शान्ति के दिए गए आदेशों पर विचार करने से एक बात स्पष्ट है कि ग्रह-शान्ति केलिए उपायों का अपना ही एक महत्त्व है और इसको जैसा मैं समझा हूँ यहाँ समझाने की कोशिश कर रहा हूँ।

कर्म से बना हुआ प्रारब्ध् तीन प्रकार का होता है-

1. दृढ़,

2 अदृढ़,

3. दृढ़ादृढ़ कर्म।

हम जो यथा ग्रह शान्ति के उपाय करते हैं उसमें दृढ़ कर्म का फल तो प्रत्यक्ष कई बार देखने को मिलता है और इसे टाला नहीं जा सकता। अदृढ़ कर्म का फल टाला जा सकता है। तथा दृढ़ादृढ़ कर्म का फल थोड़ा भोगना भी पड़ सकता है और थोड़ा टाला भी जा सकता है।

इसके लिए बृहत्पाराशर होराशास्त्र इत्यादि में कुछ स्तोत्रों का वर्णन है जिनमें तीन प्रमुख हैं- ओम नमः शिवाय मंत्र, दुर्गा सप्तशती, विष्णु सहस्रनाम। इसी के साथ-साथ कुछ महात्माओं द्वारा बताए गए उपाए भी बहुत कारगर होते पाए गए हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं। हनुमान चालीसा जिसे राजकोट के रोकड़िया हनुमान बाबा सात बार लोगों को करने को बताते थे। लेकिन उसके पहले से नीब करौली बाबा तो एक मात्र यही उपाय बताते थे और उत्तर भारत में कई जगह हनुमान मंदिरों की उन्होंने स्थापना भी की थी। कुछ भी हो जाने पर वे हनुमान चालीसा ही करने को कहते थे।

भगवान शंकर के नाम स्मरण का और शिवरात्री के उपवास का खास महत्व है। परन्तु सबसे ज्यादा प्रचलित और दक्षिण भारत में सर्वमान्य रहा-विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र बृहत्पाराशर होराशास्त्र में इसका अनुमोदन तो है ही, किन्तु विष्णु सहस्रनाम के फल की अनुभूति करके और इसके बारे में एक-दूसरे को बताकर इसका प्रचलन दक्षिण भारत में ऐसे ही हुआ जैसे उत्तर भारत में हनुमान चालीसा का। कुछ लोग अपने गुरु द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का पालन करते हुए और भी प्रकार के उपाय करते हैं जिनमें से एक है- 'राधा' नाम का स्मरण करते हुए वृंदावन की परिक्रमा करना विशेषकर

ब्रह्मवैवर्तपुराण का 'राधा परिहार स्तोत्र'।

कौन सा शान्ति का उपाय कारगर हो रहा है यह तो अपनी-अपनी अनुभूति पर आधारित है। परन्तु 'विष्णु- सहस्रनाम' और श्रीमद्भागवत का 'नारायण कवच' को मैंने अपने अनुभव में शक्तिशाली पाया। साथ ही साथ हनुमान चालीसा तो है ही और लोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी भी प्रकार के शान्ति के उपायों में दान और सेवा का स्थान सदैव सर्वोपरी रहेगा।

बोल रहा है सब संसार, बाबा तेरी जय-जयकार...

पूज्य गुरुदेव की शिक्षाएं उनके अनुयायियों के माध्यम से आज सम्पूर्ण विश्व को आलोकित कर रही हैं। धर्म ध्वजा को सम्पूर्ण विश्व में फहराने का श्रेय पूज्य गुरुदेव स्वामी पुरुषोत्माचार्य जी महाराज को जाता है। स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज ने इस दिव्यधाम की स्थापना लोककल्याण के लिए की थी। आज इस केंद्र पर पीठासीन वर्तमान आचार्य अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने यहां की सुवास दुनिया भर में फैलाई है। उनके संपर्क में आने वाले देश दुनिया के भक्त अपने संपर्कों से यहां की प्रशंसा करते नहीं थकते हैं। यही कारण है कि जो यहां एक बार आता है वह यहीं का होकर रह जाता है। श्री गुरु महाराज के शुभाशीर्वाद से आज भारत के साथ साथ दुनिया के करीब दो दर्जन देशों से लोगों का दिव्यधाम में आना हो रहा है। यह लोग संयुक्तअरब अमीरात के दुबई, नाइजीरिया के लागोस व कानो, दक्षिण अफ्रीका के डरबन व जोहानिसबर्ग, हांगकांग, स्पेन में टेनेरिफ व एलिकांटे, न्यूजीलैंड में लिंकन व क्राइस्ट चर्च आदि जगहों पर बाबा के नाम का परचम फहरा रहे हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)

एक परिचय : श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) की दिव्यता अकल्पनीय है। हमारे नारायण स्वरूप प्यारे गुरु स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज के शब्दों में, यह पवित्र स्थान दिव्य महासागर के मंथन से प्रकट हुई दिव्य गौ कामधेनु के समान है। जहां केवल भाव की आवश्यकता है। श्री सिद्धदाता आश्रम पर विश्वास रखो, यह आपको ऐसे परिपूर्ण करता है जैसे मां अन्नपूर्णा सभी को पौष्टिकता से परिपूर्ण भोजन प्रदान कर तृप्त करती हैं।

हम असंख्य लोगों के अनुभवों के आधार पर कह सकते हैं कि कल्पवृक्ष रूपी श्री सिद्धदाता आश्रम में आने वाला कभी भी यहां से खाली हाथ नहीं जाता है।

श्री सिद्धदाता आश्रम के लिए स्थान के चयन के साथ भी एक चमत्कारिक घटना जुड़ी है। एक बार जब श्री गुरु महाराज जी सूरजकुंड बड़खल मार्ग से यात्रा कर रहे थे, तब उन्होंने यहां पानी का एक चश्मा देखा। उसी रात, उनके ईष्ट देव ने उन्हें आदेश दिया कि जहां पानी का चश्मा देखा था, वहीं मेरा स्थान बनाओ। इस आदेश को शिरोधार्य कर श्री गुरु महाराज जी ने वर्ष 1989 में फरीदाबाद की अरावली पर्वत श्रृंखला अंतर्गत व्यास पहाड़ी पर श्री सिद्धदाता आश्रम की नींव रखी।

अरावली पर्वत माला का यह हिस्सा ऐतिहासिक एवं पौराणिक रूप से आध्यात्मिक और धार्मिक गतिविधियों के लिए जाना जाता है।

इस स्थान का नाम प्राचीन काल में ऋषि परशुराम, ऋषि व्यास और ऋषि पाराशर सहित पांडवों और उनकी मां कुंती के साथ भी जुड़ता है। दिव्य आदेश के तहत निर्मित आश्रम परिसर में वर्ष 1996 की विजयादशमी (दशहरा) के दिन श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया। श्री गुरु महाराज जी के अथक प्रयासों और भक्तों की सेवा से चार साल की अल्प अवधि में ही मंदिर के बुनियादी ढांचे और भवन का अधिकांश निर्माण संपन्न हो गया। हालांकि इस भव्य दिव्यधाम को और भव्यता देने एवं सौंदर्यीकरण करने में छह साल का और समय लग गया। इस प्रकार 23 अप्रैल 2007 को यह जनता के लिए खोल दिया गया। गुरु महाराज हमेशा कहते कि श्री सिद्धदाता आश्रम सिद्धों को भी देने वाला है और हम बाबा के एक एक शब्द को सच बताने वाले असंख्य अनुभवों के साक्षी हैं, जो यहां से चमत्कृत और उपकृत हैं।

निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा - ''प्रथम सुख निरोगी काया''

फरीदाबाद के बड़खल सूरजकुंड मार्ग स्थित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में स्थापित डिस्पेंसरी असंख्य लोगों को रोगमुक्ति करा ही रही है, वहीं आश्रम की ओर से यहां पर समय समय पर बड़े कैंपों का आयोजन किया जाता है, जिनमें बड़े-बड़े अस्पतालों व जाने माने चिकित्सकों की सेवाएं एवं सहयोग भी प्राप्त होता है। इस प्रकार इन कैंपों व डिस्पेंसरी के आयोजनों का अर्थ स्वयंसिद्ध हैं। महाराजश्री कहते हैं कि एक व्यक्ति धर्म एवं कर्म तब ही कर सकेगा जब वह शरीर से निरोगी होगा। शरीर निरोगी होने पर आप और अधिक सेवा, सुमिरन एवं संकीर्तन कर सकेंगे। जबकि शरीर में व्याधियां होने पर परमात्मा का नाम जप भी मुश्किल हो जाता है। वह स्वयं इन कैंपों में आने वाले सेवाधारी चिकित्सकों एवं स्वयंसेवकों का मनोबल बढ़ाने के लिए पहुंचते हैं।

स्वास्थ्य जांच शिविर का उद्घाटन करते उद्योग एवं पर्यावरण मंत्री श्री विपुल गोयल जी, विधायक श्री टेकचंद शर्मा जी एवं श्री गुरु महाराज जी।

''गुरुकुल'' : संस्कृत से संस्कृति की रक्षा

श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद-वेदांग संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की गई है। यहां रहने वाले छात्रों को निःशुल्क आवास और बोर्डिंग के साथ पूर्णतः निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। इस विद्यालय का फोकस वैदिक ग्रंथों, पुराण, साहित्य, व्याकरण, कर्मकांड (अनुष्ठान प्रथा), ज्योतिष और धर्मशास्त्र आदि विषय हैं। छात्रों को हिंदी, अंग्रेजी, गणित, कंप्यूटर एवं विज्ञान की जानकारी भी दी जाती है। वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने उपरोक्त महाविद्यालय को शास्त्री स्तर तक मान्यता प्रदान की। इस प्रकार संस्कृत के सान्निध्य में हमारी विरासत एवं संस्कृति को संरक्षित किए जाने का एक प्रयास जारी है। श्री गुरु महाराज स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी ने हमेशा संस्कृत और संस्कृति के संवर्धन पर बल दिया है। उनके निर्देशानुसार मातृभाषा को उसका सही स्थान दिलाने एवं गरिमा बहाल कराने के लिए महाविद्यालय समिति निरंतर प्रयासरत है।

पुस्तकालय - "एक ज्ञान कोष"

मनुष्य संदर्भ ग्रंथों एवं ज्ञान विषयक पुस्तकों से पढ़-सीखकर खुद को विकसित करता है। इस विचार को और अधिक पुष्टता प्रदान करने के लिए परम कृपालु श्रीमद् जगद्गुरु स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने श्री सिद्धदाता आश्रम में स्वामी सुदर्शनाचार्य पुस्तकालय की स्थापना की, जिसमें सभी प्रमुख संप्रदायों के आध्यात्मिक ग्रंथ, पुराण सहित सकल धार्मिक ज्ञान से ओतप्रोत पुस्तकों को संकलित किया गया है। इस पुस्तकालय में करीब 12,000 से अधिक शीर्षक उपलब्ध हैं। जिनमें वैदिक विषयक ग्रंथ, भारतीय दर्शन, वेद, पुराण और उपनिषदों आदि संकलित हैं। पुस्तकालय में न केवल वैष्णव धर्म से संबंधित ग्रंथों, बल्कि शैव और साक्त दर्शन सहित अन्य मतों एवं संतों के ज्ञान को प्रदान करने वाली पुस्तकों को भी संकलित किया गया है।

भोजनालय : 'मानवमात्र की सेवा में समर्पित'

आश्रम में एक बड़ा रसोईघर है, जो आश्रम का अभिन्न अंग है और इसे प्यार से मां अन्नपूर्णा रसोई भी कहा जाता है। इस रसोई में प्रतिदिन आश्रम आने वालों के लिए भोजन प्रसादम तैयार किया जाता है। श्री सिद्धदाता आश्रम आने वाला कोई भक्त भूखा या प्यासा वापिस नहीं जाता। यह रसोई सभी को महाप्रसाद प्रदान करती है। श्री गुरु महाराज की कृपा और उदारता से अन्नपूर्णा रसोई का प्रसाद पाकर भक्त का जीवन पोषित होने लगता है। इस रसोई में रोजाना हजारों की संख्या में भक्तों को भोजन प्रसाद वितरित किया जाता है। यह रसोई अपने आप में समता का एक बड़ा उदाहरण प्रस्तुत करती है क्योंकि यहां हर भक्त एक पंक्ति में एक साथ बैठकर प्रसाद प्राप्त करता है।

‘मानव सेवा सर्वोपरि सेवा’

अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देशन एवं उनकी ही कृपा से सेवाभावी भक्त अनेक सेवा प्रकल्पों पर निरंतर कार्य कर रहे हैं। गत वर्ष इन सेवा प्रकल्पों में पौधारोपण, जरूरतमंदों को कंबल, शॉलों आदि का वितरण, विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं को उनकी जरूरत के मुताबिक सामान देना, सरकारी अस्पतालों में साफ-सफाई अभियान, मोतियाबिंद जैसी नेत्र बीमारी से लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए निशुल्क ऑपरेशन करवाना आदि ऐसे अनेक सेवा प्रकल्प हैं जिसमें हमारे अधिष्ठाता अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज व्यक्तिगत रुचि लेते हैं। वहीं सेवादार भी आगे बढ़कर भागीदारी करते हैं।

गौ सेवा

श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा एक गौशाला का संचालन भी किया जाता है जिसे श्री नारायण गौशाला का नाम दिया गया है। यहां 300 से अधिक गौधन को आश्रय प्राप्त हो रहा है। श्री गुरु महाराज सभी जीवों के प्रति दया से परिपूर्ण थे, लेकिन उन्हें गौओं से विशेष रूप से लगाव था। उन्होंने अनेक गौओं का नाम भी रखा था और जब वह जिस नाम की गाय को बुलाते, वो प्रेमवश दौड़ी चली आतीं। आश्रम के वर्तमान पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज इस गौशाला का संरक्षण एवं संवर्धन अपने बच्चों के जैसे ही कर रहे हैं। वह नारायण गोशाला के दैनिक कामकाज में गहरी रूचि रखते हैं। गौशाला से प्राप्त समस्त द्रव्य का उपयोग आश्रम में ही किया जाता है और इसका किसी प्रकार का वाणिज्यिक प्रयोग वर्जित है।

नामदान : 'सतगुरु का दिया दिव्यधन'

गुरु बाबा ने बताया कि कलियुग समान कोई युग नहीं, जिसमें मन के किये पाप नहीं लगते और ईश्वर केवल नाम जप से ही प्रसन्न होकर कृपाएं बरसाते हैं। आश्रम की ओर से लगभग हर महीने सैकड़ों भक्तों को नामदान की व्यवस्था की जाती है। इस अवसर पर गुरुदेव स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज भक्तों को तप्त चक्रांकन के माध्यम से शंख एवं चक्र लगाकर उन्हें श्रीहरि जी की शरणाई में लगाते हैं। इस विधि में हवन, यज्ञोपवीत व शरणागति महत्वपूर्ण अंग हैं। बाबा स्वयं भक्तों के कान में नाम दीक्षा देकर उनकी मुक्ति की राह सरल बनाते हैं। इस नाम ने अनेक तारे और अपने जीवन को सही राह पर ले जा रहे हैं। बाबा प्रवचन में बताते हैं कि शंख, चक्र लगे जीव को अकाल मृत्यु का भय नहीं सताता और शास्त्र कहते हैं कि ऐसे भक्त का काल भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं क्योंकि भगवान श्रीमन्नारायण के पार्षद नामदान पाने वाले जीव की रक्षा के लिए उपस्थित रहते हैं।

प्रयागराज महाकुंभ-2019 (15 जनवरी से 4 मार्च)

श्री लक्ष्मी नारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज की कृपा एवं निर्देश पर प्रयागराज में आयोजित कुंभ मेला में आश्रम का विशाल शिविर लगाया गया। जहाँ श्रद्धालुओं के ठहरने एवं भोजन की उचित व्यवस्था की गई। आश्रम शिविर के अन्नक्षेत्र में सभी व्यक्तियों के लिए भोजन रूपी प्रसाद की अति उत्तम व्यवस्था रही। कुम्भ प्रवास के दौरान श्री गुरु महाराज की अनेक संत महात्माओं, अधिकारियों, भगवद्भक्तों से मुलाकात हुई जिसमें देश, समाज, संस्कृति व धर्म के अनेक मुद्दों पर परस्पर चर्चा की गई। श्री गुरु महाराज जी ने त्रिवेणी संगम में स्नान उपरांत श्री गंगा जी में नौका विहार किया तथा ऐतिहासिक किले के द्वार (जिस द्वार से रानी जोधाबाई संगम स्नान के लिए आती थी) व अक्षयवट वृक्ष के दर्शन किए। आश्रम शिविर में श्री गुरु महाराज जी ने राष्ट्र एवं जन कल्याण हेतु हवन यज्ञ, पूजा पाठ आदि किया। इस महाकुम्भ में स्नान हेतु शिविर पहुंचे भगवद्भक्तों को श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद व प्रसाद प्राप्त हुआ।

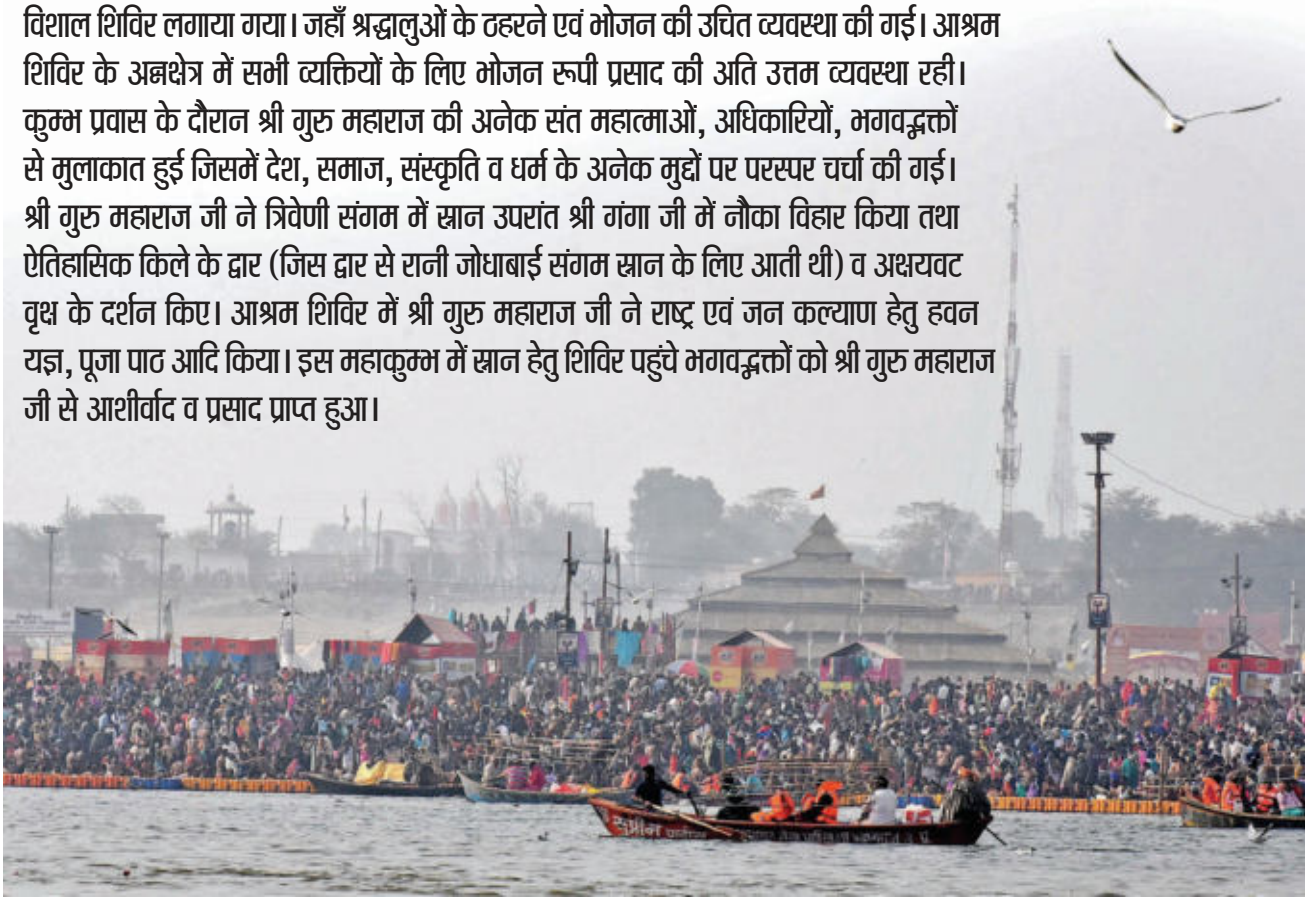

स्वामी श्री अच्युत प्रपन्नाचार्य जी महाराज, बक्सर (बिहार) के साथ पूज्य गुरुदेव धर्म चर्चा के दौरान।

स्वामी श्री रामेश्वराचार्य जी (बड़ा खटला) वृन्दावन व साथ में श्रीमद् ज.गु.रा. स्वामी श्री श्रीधराचार्य जी महाराज के साथ त्रिवेणी संगम पर सत्संग लाभ।

श्रीमद् ज.गु.रा. त्रिदंडी स्वामी श्री देवनारायणाचार्य जी महाराज, पीठाधीश्वर श्री हरिदेव दिव्य देश (वृन्दावन) पूज्य गुरुजी के साथ ज्ञान सागर में गोता लगाते हुए।

श्रीमद् ज.गु.रा. स्वामी श्रीधराचार्य जी, श्रीमद् ज.गु.रा. स्वामी श्री वासुदेवाचार्य जी (विद्याभास्कर), स्वामी श्री रामेश्वराचार्य जी एवं श्री गुरु महाराज जी विश्व कल्याण के लिए चर्चा करते हुए।

संतों संग श्री संगम पर जाते हुये श्री गुरु महाराज जी।

श्रीमद् ज.गु.रा. स्वामी श्री श्रीधराचार्य जी व साथ में श्रीमद् ज.गु.रा. स्वामी श्री घनश्यामाचार्य जी महाराज।

श्रीमद् ज.गु.रा. स्वामी श्री राजनारायणाचार्य (भक्ति वाटिका, देवरिया) से संग धर्म पर चर्चा करते हुये श्री गुरु महाराज जी।

श्रीमद् ज.गु.रा. स्वामी श्री श्यामनारायणाचार्य जी महाराज (आचार्य वेला, हरिद्वार)।

संत साधुओं को भेंट देते हुये श्री गुरु महाराज जी।

'विद्याभास्कर' श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री वसुदेवाचार्य जी महाराज (अयोध्या) से भेट करते श्री गुरु महाराज जी।

जूनापीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेशवर स्वामी श्री अवधेशानंन्द गिरि जी महाराज (जूना अखाड़ा) संग श्री गुरु महाराज जी।

अनुष्ठान के बाद बटुकों को भेंट देते हुये श्री गुरु महाराज जी।

संतों संग धर्म पर चर्चा करते हुये श्री गुरु महाराज जी एंव स्वामी श्री संपूर्णानंद जी महाराज (महंत श्री पंच अग्नि अखाड़ा)।

श्रीमद् ज.गु.रा. स्वामी श्री श्रीधराचार्य जी व स्वामी सुदर्शन आचार्य जी।

गुरुदेव संग श्री श्री श्री लक्ष्मीप्रपन्नाचार्य त्रिदण्डी जीयर स्वामी जी (बक्सर, बिहार) श्रीमद् ज.गु.रा. स्वामी श्री अनन्ताचार्य जी महाराज (उज्जैन)।

कार्षि्ण गुरु स्वामी श्री गुरु शरणानन्द जी महाराज (रमन रेती, वृन्दावन), संग भेंट करते श्री गुरु महाराज जी।

धर्म चर्चा के दौरान श्री श्री श्री लक्ष्मीप्रपन्नाचार्य त्रिदण्डी जीयर स्वामी जी (बक्सर) बिहार, स्वामी श्री रामेश्वराचार्य जी एवं श्री गुरु महाराज जी

श्रीमद ज.गु. रामानन्दाचार्य स्वामी श्री हंसदेवाचार्य जी महाराज।

प्रयागराज में भक्त परिवार संग श्री गुरु महाराज जी।

कुंभ मेले में श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम द्वारा लगाया गया शिविर।

प्रयाग किले में स्थित करोड़ों लोगों की आस्था वाले अक्षयवट मंदिर के दर्शन करते श्री गुरु महाराज जी।

कुंभ मेले के दौरान समग्र रामानुज संप्रदाय द्वारा निकाली गई शोभा यात्रा।

श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनाराण दिव्य धाम
में
वै0 सद्गुरुदेव जी की अनुकम्पा से श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी
श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में
माननीय उद्योग एवं पर्यावरण मंत्री (हरियाणा सरकार) श्री विपुल गोयल जी द्वारा
"सौर ऊर्जा अपनाएँ, पर्यावरण बचाएँ"
100 K.Wt.
सौर ऊर्जा प्लांट
का उद्घाटन
शुक्रवार, 07 जून 2019
श्री विपुल गोयल
पर्यावरण मंत्री, हरियाणा सरकार
आयोजक : जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, श्री सिद्धदाता आश्रम संचालन कमेटी
स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज

सौर ऊर्जा पावर प्लांट : एक कदम स्वच्छ पर्यावरण की ओर

हरियाणा सरकार में केबिनेट मंत्री श्री विपुल गोयल ने श्री सिद्धदाता आश्रम में अधिष्ठाता जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में 100 किलोवाट सौर ऊर्जा प्लांट का उद्घाटन किया। मंत्री श्री विपुल गोयल ने कहा कि परंपरागत ऊर्जा स्रोतों के सीमित होने और मांग बढ़ने के कारण हमें नए विकल्पों को अपने प्रयोग में लाना होगा। यह आनंद की बात है कि इस दिशा में श्री सिद्धदाता आश्रम ने एक आध्यात्मिक केंद्र होने के बावजूद पहल की। इस अवसर पर जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने बताया कि आश्रम में 100 किलोवाट बिजली उत्पन्न करने की क्षमता वाला प्लांट लगाया गया है। जो न केवल आश्रम की दिन की बिजली जरुरत को पूरा करने में सक्षम होगा बल्कि बची हुयी बिजली ग्रिड (बिजली विभाग) को देगा। इससे सरकार और बिजली निगम पर दवाब कम होगा, साथ ही साथ पर्यावारण की भी सुरक्षा होगी।

सौर उर्जा प्लांट का रिबन काटकर शुभारंभ करते उद्योग एवं पर्यावरण श्री मंत्री विपुल गोयल जी एवं श्री गुरु महाराज।

श्री सिद्धदाता आश्रम में लगाये गये सौर उर्जा प्लांट का विहंगम दृश्य।

फरीदाबाद भास्कर

धूमधाम से हुआ नारायण व माता लक्ष्मी का विवाहोत्सव

फरीदाबाद केसरी

SATURDAY, 11 MAY 2019

भगवान नारायण की शोभायात्रा में शामिल होंगे हजारों भक्त

धर्म की रक्षा के लिए हुआ रामानुज स्वामी का अवतार

हिन्दुस्तान फरीदा

फरीदाबाद

भास्कर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के छोटे भाई प्रह्लाद मोदी पहुंचे सिद्धदाता आश्रम

दैनिक जागरण

पीएम के भाई प्रह्लाद मोदी पहुंचे सिद्धदाता आश्रम

Punjab Kesari, Delhi

12 मई 2019

धूमधाम से निकाली शोभायात्रा

दिव्यधाम में 382 के

फरीदाबाद केसरी

191 लोगों ने करवाई मोतियाबिंद की जांच

हिन्दुस्तान फरीदाबाद LIVE

फरीदाबाद LIVE सिटी

फरीदाबाद केसरी

नामदान से व्यक्ति को जीवन में संबल प्राप्त होता है : स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य

श्री सिद्धदाता आश्रम में 261 लोगों को मिली दीक्षा

फरीदाबाद भास्कर

हिन्दुस्तान फरीं

हनुमान जयंती पर निकली शोभायात्रा

विराट वैभव

सौर ऊर्जा के सहयोग से आगे बढ़ेगा भारत : विपुल गोयल

स्वदेश चोपड़ा जी की पुण्यतिथि पर 7 को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

सैंकड़ों ने करवाई जांच, मोतियाबिंद के मुफ्त ऑपरेशन के लिए 27 लोग चयनित

स्वामी सुदर्शनाचार्य की पुण्यतिथि पर स्वास्थ्य जांच शिविर

पंजाब केसरी

पौधरोपण कर पर्यावरण बचाने का दिया संदेश

स्वामी जी ने बताए पर्यावरण रक्षा के उपाय

अमर उजाला

पायनियर

सिद्धदाता आश्रम में विपुल गोयल ने सौर ऊर्जा प्लांट का किया शुभारंभ

फरीदाबाद भास्कर

नाम दान से व्यक्ति को जीवन में संबल प्राप्त होता है : पुरुषोत्तमाचार्य महाराज

फरीदाबाद के

दिव्यधाम में हजार ने की मां की आ

पायनियर

धूमधाम से मनी गुरू पूर्णिमा, शिष्यों ने लिया आशीर्वाद

फरीदाबाद LIVE

सिद्धदाता आश्रम में स्वास्थ्य जांच शिविर

शोभायात्रा, संकीर्तन व भंडारे आयोजित

शोभायात्रा में नाचते गाते निकले भक्तगण

आज समाज नेटवर्क

शास्त्रीय संगीत ... श्रद्धालु मंत्रमुग्ध

दैनिक भास्कर

आज समाज

सिद्धदाता आश्रम में मनाई गुरु पूर्णिमा

श्री सिद्धदाता आश्रम में धूमधाम से मनाई श्री नृसिंह

भगवान श्री नरसिंह का अभि... कर शहर में निकाली शोभाय...

समाज को बचाने के लिए भगवान ने लिया राम अवतार: स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य

फरीदाबाद केसरी

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर झांकियों ने मोहा लोगों का मन

फरीदाबाद केसरी

भगवान लक्ष्मीनारायण के विवाहोत्सव में शामिल हुए भ...

अमर उजाला

रातभर जन्माष्टमी का उल्लास रहा

फरीदाबाद केसरी

गुरू की युक्ति से भगवान के दर्शन होते

फरीदाबाद केसरी

पांच दिवसीय बारहवें ब्रह्मोत्सव का शुभारंभ

- दक्षिण भारत से आए विद्वानों ने शुरू करवाई पूजा
- सात से 11 मई तक होगा विशिष्ट पूजन

फरीदाबाद केसरी

नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल ...

औद्योगिक नगरी में धूमधाम से मनाया श्री कृष्ण जन्माष्टमी

50 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने दर्शन किए

की सेवा में रत रहने वाले सेवादारों का सम्मान

112 लोगों ने नामदान लिया

आज समाज

दिल्ली-गुरुग्राम-फरीदाबाद-नोएडा

गुड़गांव टुडे

सौर ऊर्जा के सहयोग से आगे बढ़ेगा भारत : विपुल गोयल

फरीदाबाद केसरी

MONDAY, 26 AUG 2019

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों संग जन्माष्टमी के साक्षी बने भक्तगण

गुरु दर्शन को पहुंचे विशिष्ट भक्तजन

श्री वैष्णव परंपरा के श्री रामानुज संप्रदाय की ख्याति का केंद्र बन चुके हरियाणा के फरीदाबाद स्थित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में वर्ष पर्यंत अति विशिष्ट अतिथियों का निरंतर आवागमन बना रहता है। वह अनंतश्री विभूषित श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के साथ धर्म, दर्शन, समाज पर चर्चाएं करते हैं वहीं अपने जीवन के अनसुलझे पहलुओं को भी सुलझाते हैं। परम पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि हमें आश्रम में आने वाले अपने मेहमानों का ऐसे दिल खोलकर स्वागत करना चाहिए जैसे कि हम अपने घर आने वाले मेहमानों का स्वागत करते हैं। वह कहते हैं कि हम जब अपने महमानों का मन से स्वागत करते हैं तो दोनों पक्ष प्रसन्न होते हैं और दोनों के ही जीवन में समृद्धि आती है और सबसे बड़ी बात यह है कि मानव के लिए इन मानवीय गुणों की बड़ी आवश्यकता भी है।

राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री कलराज मिश्रा जी सहपत्नि श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

जजपा के संस्थापक अध्यक्ष श्री अजय चौटाला जी श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

हरियाणा के मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार श्री अजय गौड़ जी।

कर्नाटक के मांड्या जिला के मेलकोट से राष्ट्रपति-सम्मानित विद्वान श्रीमान एम.ए. लक्ष्मीथाथाचार्य जी श्री गुरु महाराज जी को शाल भेंट कर सम्मानित करते हुये।

हरियाणा की पूर्व डिप्टी स्पीकर श्रीमति सुधा यादव जी, एमसीएफ कमिश्नर श्रीमति अनीता यादव (आईएएस)।

आईपीएस डॉ. राजश्री सिंह, आईजी ट्रैफिक एंड हाईवेज (हरियाणा पुलिस) श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते उद्योगपति श्री केसी पांडे जी, श्री बीके मिश्रा जी एवं श्री वीरेन्द्र शर्मा जी व अन्य।

पूर्व राज्यसभा सांसद श्री करण सिंह जी श्री गुरु महाराज जी से मुलाकात करते हुये।

अध्यक्ष विद्या भारती (हरियाणा प्रान्त) आरएसएस के श्री देवीप्रसाद भारद्वाज जी गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये श्री सोहन सिंह जी (डी.ए.), फरीदाबाद व अन्य।

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के बड़े भाई श्री प्रहलाद मोदी जी श्री गुरु महाराज जी आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

फरीदाबाद भाजपा जिलाध्यक्ष श्री गोपाल शर्मा जी श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्र संपर्क प्रमुख श्री अशोक सिंहल जी श्री गुरु महाराज से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

हरियाणा के एडीजीपी श्री आरसी मिश्रा जी सहपत्नि श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

श्री गुरु महाराज जी संग सांसद श्री शरद त्रिपाठी जी।

पूर्व सांसद, फरीदाबाद व मीरपूर (यूपी) से भाजपा विधायक श्री अवतार भड़ाना जी श्री गुरु महाराज जी से प्रसाद ग्रहण करते हुये।

श्री गुरु महाराज जी संग पुलिस कमिश्नर फरीदाबाद, संजय जी साथ में नागपुर के कमिश्नर श्री भूषण कुमार उपाध्याय जी एवं उद्योगपति केसी पांडे जी।

उद्योगपति श्री केसी पांडे जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते श्री गुरु महाराज जी।

गुरु जी संग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नेता एवं मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के संयोजक श्री इंद्रेश कुमार जी।

नागपुर के पुलिस कमिश्नर श्रीमान भूषण कुमार उपाध्याय जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते श्री गुरु महाराज जी साथ में उद्योगपति केसी पांडे जी।

श्री गुरु महाराज जी को पुष्प भेट करते हुये श्री विक्रम बिधूड़ी जी।

पूर्व कैबीनेट मंत्रि श्री विपुल गोयज जी श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

डॉ. श्री विजय रॉव जी (आर्च बिशप) श्री गुरु महाराज से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

श्री रईस खान पठानिया जी (मेंबर मिनिस्ट्री ऑफ माइनॉरिटी कॉउंसिल) श्री गुरु महाराज से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।।

तिगांव से विधायक श्री राजेश नागर जी श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

श्री नगेन्द्र भड़ाना जी, पूर्व विधायक श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

श्री गुरु महाराज जी संग उद्यमी श्री प्रमोद गुप्ता जी, (जीयो गीता)।

श्री आशूतोष मिश्रा जी परिजनों सहित।

उद्यमी श्री हरेश केश्वानी जी अपने परिवार संग श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

नागपुर के पुलिस कमिश्नर श्री उपाध्याय जी व साथ में इंडिया न्यूज के वरिष्ठ एंकर मनीष अवस्थी जी।

हरियाणा के परिवहन मंत्री श्री मूलचंद शर्मा जी श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

श्री रामबिलास शर्मा जी शिक्षा मंत्री, हरियाणा सरकार श्री गुरु महाराज जी आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

विधायिका श्रीमति सीमा त्रिखा श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

श्री गुरु महाराज जी संग उद्योगपति श्री केसी पांडे जी, श्री बीके मिश्रा जी एवं उनके सुपुत्र।

राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री कलराज मिश्रा जी, विधायिका सीमा त्रिखा जी, जिलाध्यक्ष श्री गोपाल शर्मा जी व अन्य।

गुरु महाराज जी संग दमण-दीव से सांसद श्री लालू भाई पटेल जी।

श्री जयदेव केसरी जी सहपत्नि संग गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

भारत सरकार में एडिशनल सेक्रेटरी श्री संजय गर्ग जी धर्मपत्नी संग श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

कांग्रेस नेता विजय प्रताप जी सहपत्नि श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

आईपीएस श्री अंबर किशोर झा जी सहपत्नि श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

आईएएस अधिकारी श्रीमति अनीता यादव जी, हुड्डा एक्सईएन श्री धर्म सिंह जी व अन्य।

समाजसेवी श्री मुनेश शर्मा जी एवं सन्त संग श्री गुरु महाराज।

जजपा नेता श्री उमेश भाटी जी।

श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते ऐडिसनल सोली-सीटर जनरल श्री आत्माराम नड़करनी जी।

श्री गुरु महाराज को गुलदस्ता भेंट करते श्री विजय शंकर पांडे जी, प्रयागराज।

जिला बार एसोसिएशन के प्रेसीडेंट श्री सतेन्द्र भड़ाना जी सहपरिवार श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

श्रीमति ज्ञान सुधा मिश्रा जी (पूर्व जस्टिस सुप्रीम कोर्ट) श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

पूज्य श्रीगुरुदेव संग स्वामी श्री प्रेमानंद जी महाराज एवं श्री विजय शंकर पांडे जी, प्रयागराज।

श्रीमति सरिता गुप्ता जी (न्यायाधीश) पानीपत।

दौसा, राजस्थान से विधायक श्री वौरा जी अपने साथियों संग।

श्रीमति रिचा पांडे व श्री पीयूष पांडे जी श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

आईएएस अधिकारी श्री समीरपाल सरो जी सहपत्नि श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए।

सन्त मिलन

जब तत्वदर्शी महान पुरुषों की संगति मिलती है तो परमपिता परमात्मा की याद आती है। उनकी सत्संगति से मानव जीवन में सत्संग तथा परमात्मा के नाम के महत्व का पता चलता है तथा उसे हृदय में जानने की जिज्ञासा होती है। तब वे महान पुरुष परमात्मा के नाम व स्वरूप् का बोध हृदय में करा देते हैं। बीते वर्ष श्री सिद्धदाता आश्रम व आश्रम के बाहर कार्यक्रमों में श्री गुरु महाराज जी की कई सन्त-महात्माओं से भेंट व धर्म चर्चा हुई।

स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज (जीयो गीता) को स्मृति चिन्ह भेंट करते श्री गुरु महाराज जी।

श्रीमद् जगद्गुरु स्वामी श्री राजनारायणाचार्य जी महाराज से धर्मचर्चा करते हुए श्री गुरु महाराज जी।

गुरु जी संग स्वामी श्री राघवेन्द्राचार्य जी (अध्यक्ष : श्री मुरली मनोहर मंदिर), जयपुर।

परम पूज्य श्री गुरुदेव जी से मिलने आश्रम पहुंचे स्वामी श्री संपूर्णानंद जी महाराज (पंचकूला)।

पूज्य गरुदेव संग श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री श्यामनारायणाचार्य जी महाराज।

स्वामी श्रीपद् श्रीवल्लभा वेंकट विश्वनाथन श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये।

श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए इस्कॉन दिल्ली से आये महंत जी।

स्वामी श्री रावतपुरा सरकार (म.प्र.)।

श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते स्वामी श्री सुदर्शन आचार्य जी।

योग गुरु बाबा रामदेव जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते श्री गुरु महाराज जी।

श्री गुरु महाराज जी से बहुमान प्राप्त करते हुए दंडी संत।

प्रवास

सदगुरुदेव अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज जी अपने प्रवास के दौरान केसरी हनुमान मंदिर (केसरिया धाम, नारनौल), बड़ा खटला वृन्दावन, जयपुर में शादी समारोह, केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गड़करी जी से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर भेंट की साथ ही नागपुर में हुये शादी समारोह के दौरान श्री गुरु महाराज संग राष्ट्रीय स्वयं सेवक संग के प्रमुख श्री मोहन भागवन जी व साथ में उद्योगपति श्री केसी पांडे जी।

श्री गुरु महाराज जी एवं स्वामी श्री संपूर्णानंद जी महाराज का स्वागत करते हुये हरियाणा के एडीजीपी श्री आरसी मिश्रा जी।

श्री गुरु महाराज को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुये हरियणा के एडीजीपी श्री आरसी मिश्रा जी व स्वामी संपूर्णानंद जी महाराज।

केसरी हनुमान मंदिर (केसरिया धाम, नारनौल)

बड़ाखटला, वृन्दावन में खटलेश स्वामी श्री रामेश्वराचार्य महाराज जी संग श्री गुरु महाराज।

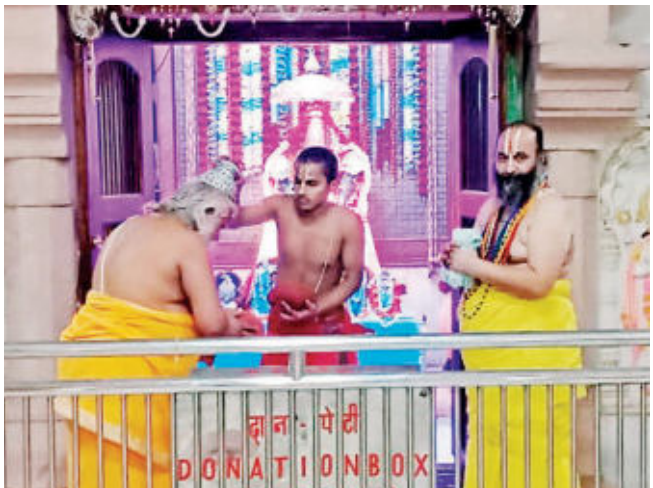

दर्शनः श्री वरदराज भगवान् (बड़ाखटला, वृन्दावन)

फरीदाबाद के पुलिस कमिश्नर श्री संजय जी को आश्रम का परिचय पत्र भेंट करते श्री गुरु महाराज जी साथ में नागपुर के कमिश्नर श्री भूषण कुमार उपाध्याय जी व उद्योगपति केसी पांडे जी।

भेंटवार्ता : केंद्रीय मंत्री नितिन गड़करी जी संग श्री गुरु महाराज।

जयपुर : श्री आर.के. शर्मा जी की पुत्री के विवाहोत्सव में नव वर-वधु को आर्शीवाद देते श्री गुरु महाराज जी।

भेंटवार्ता : केंद्रीय मंत्री नितिन गड़करी जी संग श्री गुरु महाराज साथ में उद्यमी श्री केसी पांडे जी व अन्य।

जयपुर : श्री गुरु महाराज जी से आर्शीवाद प्राप्त करते हुये पंडित केदार शर्मा जी।

जयपुर : श्री अजय शंकर पांडे जी (ओएसडी गर्वनर राजस्थान) एवं उद्यमी श्री जगदीश सोमानी जी।

नागपुरः शादी समारोह के दौरान श्री गुरु महाराज संग राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख श्री मोहन भागवत जी व साथ में उद्योगपति श्री केसी पांडे जी।

नव वर वधु को आर्शीवाद देते हुये परम पूज्य श्री गरुदेव संग राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख श्री मोहन भागवत जी, नागपुर कमिश्नर श्री भूषण कुमार उपाध्याय जी, उद्योगपति श्री केसी पांडे जी व अन्य।

नारायण दिव्यधाम (श्री

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)
नववर्ष उत्सव
2019

सूर्य की एक और परिक्रमा

एक जनवरी को पूरी दुनिया इस्वी कलैंडर के हिसाब से नव वर्ष मनाती है और हम अपने पूज्य गुरुदेव, श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायाण दिव्यधाम के अधिपति अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज का पावन जन्मदिवस। यह उत्सव दर असल पूज्य गुरुदेव द्वारा की गई सूर्य की एक और परिक्रमा का उत्सव है। पूज्य गुरुदेव ने जहां नव वर्ष पर विश्व कल्याण के लिए प्रार्थना की वहीं हजारों भक्तों ने हैपी बर्थडे टू गुरुजी गाकर उत्सव मनाया। पूज्य गुरुदेव ने कहा कि परमात्मा की अमूल्य देन है मानव जीवन और इस जीवन को लोककल्याण के कार्यों एवं परमात्मा नाम स्मरण में लगाएं।

नववर्ष उत्सव एवं श्री गुरु महाराज जी का जन्मोत्सव, 01 जनवरी, 2019

होली
2019
महोत्सव

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)
2019
महोत्सव

होरिया में उड़ा रे गुलाल

गुरु कृपा का गुलाल उड़ रहा था और गुरु प्रेम से सराबोर हजारों भक्त घंटों झूमते रहे। अवसर था श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मी नारायण दिव्यधाम में होली का। उपस्थित हजारों भक्तों को अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने कहा कि अगर भीगना ही है तो प्रभु के नाम और गुरु की दिखाई सीख में भीगो, जिससे भव सागर तर जाओगे।

होली महोत्सव, 20 मार्च, 2019

भये प्रकट कृपाला दीन दयाला...

मर्यादा की स्थापना करनेवाले जन-जन के आराध्य भगवान श्री रामचंद्र के जन्मोत्सव पर श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मी नारायण दिव्यधाम में विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन किया गया। पूज्य गुरु महाराज ने भगवान श्रीराम के श्रीविग्रह का षोडशोपचार विधि से पूजन किया और उपस्थित हजारों भक्तों पर कृपा बरसाई।

श्री राम नवमी, 13 अप्रैल, 2019

महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी

भक्त शिरोमणि श्री हनुमान जी की जयंती पर श्री लक्ष्मी नारायण दिव्यधाम में विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन हुआ। गुरु जी ने उपस्थित हजारों भक्तों को आशीर्वाद के साथ हनुमत कृपा पाने के उपाय भी बताए।

श्री हनुमान जयंती, 19 अप्रैल, 2019

वैभवपूर्ण तरीके से मनाया द्वादशम् ब्रह्मोत्सव

श्री सिद्धदाता आश्रम के पांच दिवसीय 12वें श्री ब्रह्मोत्सव (07 से 11 मई 2019) के वैभवपूर्ण तरीके मनाया गया। आश्रम के अधिष्ठाता अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने सभी पुजारियों, वेद छात्रों एवं सेवादारों सम्मान स्वरूप भेंट एवं आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने कहा कि भगवान् की कैंकर्य सेवा करने वाले को अनंत एवं अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। श्री ब्रह्मोत्सव की सोभा बढ़ाने श्रीधाम वृन्दावन से पधारे खटलेश स्वामी श्री रमेश्वराचार्य जी महाराज एवं आरा (बिहार) से पधारे जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री ज्योतिनारायणाचार्य जी महाराज का श्री गुरु महाराज ने आदर एवं सम्मान सहित बहुत बहुत आभार व्यक्त किया।

द्वादशम ब्रह्मोत्सव, 07-11 मई, 2019

धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम
ब्रह्मोत्सव
2019

भाष्यकार स्वामी श्री रामानुज जयंती

श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में श्री संप्रदाय को पुनर्स्थापित करने वाले भाष्यकार भगवान श्री रामानुज स्वामी जी की जयंती बड़ी ही धूमधाम के साथ मनाई गई। इस अवसर पर गुरुदेव स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने बताया कि रामानुज स्वामी ने धरती पर बढ़ रहे अधर्मियों को अपने ज्ञान द्वारा धूल धूसरित किया एवं विशिष्टाद्वैत मत को स्थापित किया। उन्हीं की परंपरा में वैकुंठवासी महाराज के तप से श्री सिद्धदाता आश्रम भी सिद्धपीठ हुआ जहां सिद्धों को भी प्राप्ति होती है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। इसी दिन शाम को भाष्यकार स्वामी जी के उत्सव विग्रह के साथ एक शोभायात्रा निकाली गई जिसमें हजारों भक्त सम्मिलित हुए।

भाष्यकार स्वामी रामानुज जयंती, 10 मई, 2019

भगवान श्री नृसिंह जयंती

श्री सिद्धदाता आश्रम में भगवान नृसिंह की जयंती जोरदार ढंग से मनाई गई। आश्रम के अधिपति श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने भगवान का सविधि अभिषेक किया। शाम को आयोजित शोभायात्रा में हजारों की संख्या में शामिल भक्तों के जयकारों से वातावरण गुंजित हुआ। महाराजश्री ने भगवान का सविधि अभिषेक पूजन एवं लोककल्याण के लिए प्रार्थना की।

श्री नृसिंह भगवान की जयंती, 17 मई, 2019

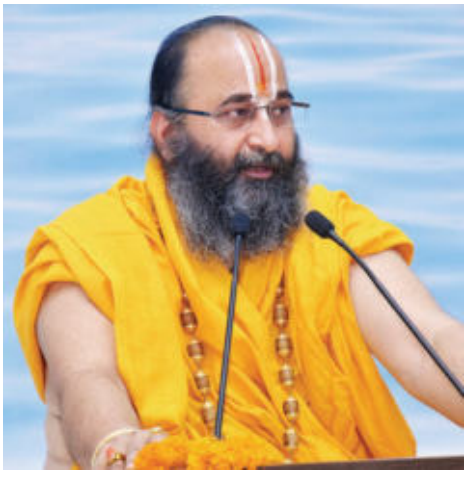

बाबा की पुण्यतिथि

श्री सिद्धदाता आश्रम के संस्थापक वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर आश्रम के अधिष्ठाता अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगद्गुरु रममानुनाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में विशाल चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें कैंसर, हृदय, हड्डी एवं स्त्री रोगों सहित कानों की श्रवण शक्ति एवं मोतियबिंद की विशेष जाँच की गयी। इस अवसर पर सुनने की मशीनें और मोतियबिंद ऑपरेशन की निःशुल्क व्यवस्था की गयी। करीब 763 लोगों ने अपने स्वास्थ्य की जांच करवाई। जिन्हें श्री गुरु महाराज जी ने बाबा के वचनों पर चलने का सन्देश दिया।

वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की पुण्यतिथि, 22 मई, 2019

"आनंदोत्सव" - आश्रम का स्थापना दिवस एवं श्री सद्गुरुदेव जी की जयंती

श्री सिद्धदाता आश्रम के स्थापना दिवस एवं संस्थापक स्वामी सुदर्शनाचार्य जी की जयंती को आनंदोत्सव के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर अधिष्ठाता अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में भाजपा हरियाणा प्रदेश प्रभारी श्री कलराज मिश्र, विधायक पं टेकचंद शर्मा, भाजपा फरीदाबाद जिलाध्यक्ष श्री गोपाल शर्मा, भाजपा नेता श्री राजेश नागर आदि भी मौजूद रहे। इस अवसर पर श्री गुरु महाराज ने बताया कि वैकुंठवासी बाबा ने आश्रम एवं दिव्यधाम की स्थापना मानव मात्र के कल्याण के लिए की है। शाम को बैंड बाजों, ताशों, शहनाइयों के साथ विशाल शोभायात्रा निकाली गई। वहीं जयपुर से आए गायक संजय पारिख व लोकेश शर्मा ने सुमधुर भजनों पर भक्तों को जमकर झुमाया।

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की जयंती (आनंदोत्सव), 27 मई, 2019

गुरु पूर्णिमा

सूरजकुंड रोड स्थित श्री सिद्धदाता आश्रम में श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव बड़ी ही धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अधिपति श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने कहा कि शिष्य को गुरु पर विश्वास रखते हुए जीवन को जीना चाहिए, इससे जीवन सरल हो जाता है। लेकिन शिष्य को गुरु के सामने कुछ छुपाना नहीं चाहिए बल्कि गुरु को अपने खोट बता देने चाहिए। गुरु उन खोट को खतम कर देगा। यहाँ पर देश विदेश से आये हजारों भक्तों ने गुरु के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। अनेक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, भजन माधुरियों के बीच भक्तों ने गुरु के आगमन पर जयघोष किया।

श्री गुरु पूर्णिमा, 15 जुलाई, 2019

ॐ नमः शिवाय, शिवजी सदा सहाय

श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में स्थित श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम में श्रावण शिवरात्रि का पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। आश्रम के अधिपति श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने वैदिक विधि विधान से भगवान शिव के मूर्त रुप का महाभिषेक किया। हजारों की संख्या में आश्रम पहुंचे कांवरियों और भक्तों ने देवाधिदेव महादेव भगवान शिव पर गंगा जल चढ़ाकर पूजा व प्रार्थन की। इसके पश्चात सभी ने श्री गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में शीश झुकाकर नमन करते हुए आशीर्वाद लिया और भोजन प्रसाद प्राप्त किया।

श्रावण शिवरात्रि, 19 जुलाई, 2019

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)
श्रीकृष्ण

हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैयालाल की...

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर अद्भुत रोशनी में नहाए श्री रामानुज संप्रदाय के तीर्थ क्षेत्र श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) में हजारों की संख्या में भक्त पहुंचे। भक्तों ने यहां लगी झांकियों का भरपूर आनंद लिया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया। इस अवसर पर हजारों लोगों ने भोजन प्रसाद एवं आशीर्वाद प्राप्त किया।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव, 12 अगस्त, 2019

माता के नवरात्रे एवं दशहरा पर्व

श्रीराम नवमी और विजय दशमी के उपलक्ष्य में श्री सिद्धदाता आश्रम में पर्व का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने कहा कि पुण्यात्माओं के जीवन में पहले संकट और फिर मौज आती है। इसलिए उन्हें संकटों से न घबराकर गुरु और अपने ईष्ट पर भरोसा रखना चाहिए। इस अवसर पर आये हजारों की संख्या में पहुंचे देश विदेश से आए भक्तों ने गुरु महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया।

दशहरा पर्व, 07 अक्टूबर, 2019

दान

हर वर्ष की भांति दीपावली से पूर्व श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में हजारों भगवान् श्रीहरि एवं गुरुदेव के श्रीचरणों में सेवारत विभिन्न सेवादार समूहों के कारसेवकों को श्री गुरुमहाराज जी ने आशीर्वाद एवं उपहार स्वरूप मिठाई, वस्त्र प्रदान किए।

21000 दीपक प्रज्वलित कर मनाई दीपावली

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम में दीपावली का पर्व बड़े हर्षोउल्लास एवं विधि विधान से मनाया गया। जहां एक ओर पूरे आश्रम परिसर को 21000 दीपों की दीपमालिका प्रज्वलित कर सजाया गया वहीं दूसरी ओर श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम रंगीन लाइटों की सुन्दर रौशनी से जगमगा उठा। संध्या समय श्री गुरु महाराज ने लोक कल्याण के लिए वैदिक परम्परा अनुसार देवी माँ श्री लक्ष्मी व श्री गणेश भगवान् का सविधि पूजन किया। इस अवसर पर लाखों की संख्या में आए भक्तों को स्वामी जी ने प्रसाद एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

दीपावली महोत्सव, 14 नवंबर, 2019

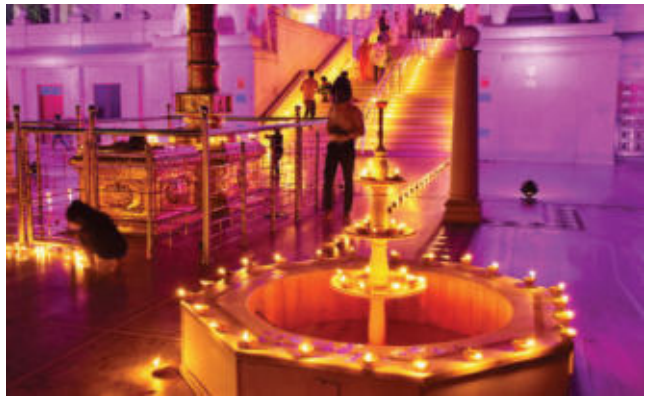

श्रीगोवर्धन पूजा

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम में गोवर्धन पूजा का त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्रीगुरु महाराज जी ने विधिवत पूजा अर्चनी की और उपस्थित सभी श्रद्धालओं को आशीर्वाद एवं प्रसाद किया।

श्री गोवर्धन पूजन, 28 अक्टूबर, 019

गोपाष्टमी पर्व

श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा संचालित श्री नारायण गौशाला गोपाष्टमी का पर्व बड़ी पूरी विधि विधान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्री गूरु महाराज जी के द्वारा सत्संग के माध्यम से संसार में गौमाता के महत्व के बारे में भक्तों को अवगत कराते हुये गौ सेवा करने के लिये लोगों को प्रेरित भी किया।

गोपाष्टमी पर्व, 04 नवंबर, 019

संस्कृत और संस्कृति की
रक्षा से ही
विश्व की रक्षा संभव है

(श्री सिद्धदाता आश्रम)

10
SIDH DATA ASHRAM

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम
(श्री सिद्धदाता आश्रम)

गीता जयंती महोत्सव : श्री सिद्धदाता आश्रम को मिले दो सम्मान

सेक्टर-12 स्थित एचएसवीपी कन्वेंशन सेंटर में आयोजित गीता जयंती महोत्सव में श्री सिद्धदाता आश्रम को दो-दो सम्मान प्राप्त हुए। यह सम्मान केंद्रीय राज्यमंत्री श्री कृष्णपाल गुर्जर ने प्रदान किए। उन्होंने कहा कि आश्रम की गतिविधियों से धर्म से भटके हुए अनेक लोगों को सही मार्ग चुनने में सहायता मिली है। महोत्सव के समापन अवसर पर आश्रम के स्टॉल पर पहुंचे केंद्रीय राज्यमंत्री श्री कृष्णपाल गुर्जर का मंत्रोच्चारण के साथ स्वागत किया गया। आश्रम में पढने़ वाले वेदपाठी छात्रों के सस्वर उच्चारण से मंत्रीजी काफी प्रसन्न दिखे। कार्यक्रम समापन अवसर पर केंद्रीय राज्यमंत्री ने श्री सिद्धदाता आश्रम की भागीदारी को सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्होंने आश्रम को विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता और सेमिनार में वक्ताओं की श्रेणी में दो अवार्ड दिए। उनसे यह अवार्ड आश्रम के मानद संपादक शकुन रघुवंशी ने प्राप्त किए। कार्यक्रम समापन कार्यक्रम में भी आश्रम के वेदपाठी छात्रों ने सस्वर 18 श्लोकों में गीता की मुख्य शिक्षाओं को प्रस्तुत कर सभी को मोह लिया। वहीं शाम को गीता जयंती के अवसर पर आश्रम गुरुकुल में पढ़ने वाले छात्रों ने श्री गीता जी को शिरोधार्य कर प्रभु नाम संकीर्तन करते हुए आश्रम की परिक्रमा की, जिसमे श्री गुरु महाराज जी व भक्तगण भी सम्मिलित रहे।

जिलास्तरीय गीता जयंती महोत्सव, 06-08 दिसम्बर, 2019

इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा से श्री सिद्धदाता आश्रम फरीदाबाद पहुंचने का मार्ग

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से श्री सिद्धदाता आश्रम फरीदाबाद पहुंचने का मार्ग

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)

मुख्य पर्व एवं अन्य कार्यक्रम-2020

01 - 01 - 2020	ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी का जन्मदिवस एवं नववर्ष उत्सव
29 - 01 - 2020	बसंत पंचमी
21 - 02 - 2020	महाशिवरात्रि
09 - 03 - 2020	होली महोत्सव
10 - 03 - 2020	होली रंगवाली
02 - 04 - 2020	श्री रामनवमी
08 - 04 - 2020	श्री हनुमान जयंती
29 - 04 - 2020	स्वामी श्री रामानुजाचार्य जयंती
30 - 04 - 2020	ब्रह्मोत्सव
06 - 05 - 2020	श्री नृसिंह जयंती
22 - 05 - 2020	श्री गुरु महाराज जी की पुण्यतिथि
27 - 05 - 2020	स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी जन्मदिवस एवं आश्रम का स्थापना दिवस
05 - 07 - 2020	गुरु पूर्णिमा
19 - 07 - 2020	श्रावण शिवरात्रि
03 - 08 - 2020	रक्षाबंधन
12 - 08 - 2020	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
17 - 10 - 2020	शारदीय नवरात्र प्रारभ
25 - 10 - 2020	दशहरा पर्व
14 - 11 - 2020	दीपावली
15 - 11 - 2020	अन्नकूट गोवर्धन पूजा
22 - 11 - 2020	गोपाष्टमी

श्री लक्ष्मी नारायण दिव्य धाम

श्री सिद्धदाता आश्रम

समय सारणी

1 नवम्बर से 28 फरवरी शीत काल

प्रातः	5.30 से 6:00 बजे	मंगला आरती
प्रातः	6:00 से 7:00 बजे	आराधना
प्रातः	7:00 से 7:15 बजे	अर्चना
प्रातः	7:15 से 7:30 बजे	बाल भोग
प्रातः	7:30 से 8:00 बजे	श्रृंगार व आरती
प्रातः	8:00 से 11:45 मध्याह्न	दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न	11:45 से 12:15 बजे	आराधना व राजभोग
मध्याह्न	12:15 से 1:00 बजे	दरबार /देव दर्शन
मध्याह्न	1:00 से 4:00 बजे	विश्राम
सायं	4:00 से 5:15 बजे	दरबार/ देव दर्शन
सायं	5:15 से 5:45 बजे	आराधना
सायं	5:45 से 6:10 बजे	अर्चना
सायं	6:10 से 6:30 बजे	राजभोग
रात्रि	6:30 से 8:15 बजे	आरती व दर्शन
रात्रि	8:15 से 8:30 बजे	शयन भोग व दर्शन
रात्रि	8:30	विश्राम

1 मार्च से 31 अक्टूबर ग्रीष्म काल

प्रातः	5.30 से 6:00 बजे	मंगला आरती
प्रातः	6:00 से 7:00 बजे	आराधना
प्रातः	7:00 से 7:15 बजे	अर्चना
प्रातः	7:15 से 7:30 बजे	बाल भोग
प्रातः	7:30 से 8:00 बजे	श्रृंगार व आरती
प्रातः	8:00 से 11:45 मध्याह्न	दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न	11:45 से 12:15 बजे	आराधना व राजभोग
मध्याह्न	12:15 से 1:00 बजे	दरबार /देव दर्शन
मध्याह्न	1:00 से 4:00 बजे	विश्राम
सायं	4:00 से 6:15 बजे	दरबार/ देव दर्शन
सायं	6:15 से 6:45 बजे	आराधना
सायं	6:45 से 7:10 बजे	अर्चना
सायं	7:10 से 7:30 बजे	राजभोग
रात्रि	7:30 से 8:45 बजे	आरती व दर्शन
रात्रि	8:45 से 9:00 बजे	शयन भोग व दर्शन
रात्रि	9:00	विश्राम

आश्रम द्वारा संचालित गतिविधियां

- स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय
- नारायण गौशाला
- पुस्कालय
- अतिथि गृह
- सत्संग भवन
- यज्ञशाला
- औषधालय
- भोजनालय

आश्रम में निम्न लिखित कार्य वर्जित हैं

- धूम्रपान करना
- मदिरापान करना
- अस्त्र/शस्त्र लाना
- चमड़े की वस्तु लाना
- जूते व चप्पल लाना
- मन्दिर में फोटो खींचना

प्रातः 8:00 बजे चाय व गोष्ठी प्रसाद
दिन में भोजन का समय 1:00 बजे
सायं 5:00 बजे चाय प्रसाद
रात्रि में भोजन का समय 8:00 बजे

नोट : मन्दिर खुलने के समय ही प्रवेश की अनुमति है

विशेष : अपने वाहन व सामान की सुरक्षा स्वयं करें।

"जो व्यक्ति गुरु के बताए धर्म मार्ग पर चलते हैं, उनके इस जीवन (इहलोक) में भी सुख है और उस जीवन (परलोक) में सुख है।

श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज"

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)

सूरजकुंड रोड, सेक्टर-44, फरीदाबाद - 121012, हरियाणा (भारत) - दूरभाष : 0129-2419717, 2419555, 9910907109

website: www.shrisidhdataashram.org OR www.shrisda.org : Like us on www.facebook.com/ShriSidhdataAshram,
email: info@shrisidhdataashram.org